गुरु का द्वार

आचार्य सुधांशुजी महाराज

इस प्रकार के सत्संग में जाते हुए इसी बात का संकोच है कि जहां पर जा कर केवल एक साधारण श्रोता के नाते बैठूँगा तो सत्संग का पूरा लाभ ले पाऊंगा। वहां पर अनाधिकारी होते हुए भी यह सोच कर के कि में भी सत्संग में कुछ दे पाऊंगा मुझसे कहने को कुछ कहा जाएगा। यूँ तो राजनीतिक क्षेत्र के जो लोग हैं उनके सामने माइक्रोफोन रखने के बाद खतरा ही पैदा होता है लेकिन जिस स्नेह से, जिस प्रकार की कृपा करते हुए सुधांशु जी महाराज ने यह बात कही उसके कारण उसको न मानना एक प्रकार से यहः बैठे हुए सब भक्त जनों का निरादर होगा। मैं मानता हूँ कि किसी भी क्षेत्र में व्यक्ति कार्य कर्ता हो उसका अघिष्ठानयदि आध्यात्मिकता में, नैतिकता में नहीं होगा तो वह चाहे साधारण कर्मचारी हो चाहे कृषक हो, चाहे व्यापारी हो, चाहे शिक्षक हो, चाहे वैद्य हो, चाहे राजनेता हो, वह कार्य के प्रति न्याय नहीं कर सकता और इस कारण इन दिनों में जहां पर भी सुधांशु जी महाराज जैसे सन्त आध्यात्म और धर्म का प्रसार करते रहते हैं। मैं मानता हूँ कि हम जैसे जितने लोग हैं किसी भी क्षेत्र में है

और खास करके मैं राजनैतिक क्षेत्र का कार्यकर्ता हूं मैं मानता हूँ कि जैसे मानो हमको अधिक शक्ति मिले हमारा कार्य अधिक सुचारू हो, देश के लिए अधिक लाभकारी हो, समाज के लिए वर्धक हो। यह कार्य मैं इतना नहीं कर सकता जितना पूज्य आचार्य की सुधांशु जी महाराज जैसे सन्त कर सकते हैं। आजकल बहुत चर्चा होती है कोई कहता है कि इस देश का विकास, इस देश की प्रगति तब होगी जब यहां की अर्थ व्यवस्था अच्छी होगी। कई लोग बहुत बार यह भी सुझाते हैं कि हमने जो संविधान स्वीकार किया है, हमने जो प्रणाली स्वीकार की है उसमें मौलिक क्रान्ति आयेगी, परिवर्तन होगा तब देश का विकास होगा। मैं मानता हूँ कि यह सारी बातें अपने अपने रूप से सही हो सकती है लेकिन जब तक देश में यह वातावरण नहीं पैदा होता कि व्यक्ति को प्रामाणिक होना चाहिए, कि व्यक्ति का अपने विवेक के प्रति प्रामणिक रहना चाहिए, ईमानदार रहना चाहिए और जिस प्रकार से पूज्य आचार्य सुधांशु जी महाराज ने कहा कि हम जितनी मात्रा में ईश्वर से यह प्रार्थना प्रामणिकता पूर्वक कर सकेंगें कि जिस प्रकार से अपने पार्थ का सारथी बन करके पार्थसारथी का रूप धारण किया था उसी प्रकार से हमारे रथ को भी ठीक प्रकार से दिशा दीजिए, ले चलिए उसी में देश का कल्याण होगा ऐसा मैं मानता हूँ। इस प्रकार के सत्सगों में भाग लेकर के मुझे इस दृष्टि से न केवल प्रेरणा मिलती है बल्कि व्यवहारिक ज्ञान भी मिलता है। इस कारण मैं इस कार्यक्रम के आयोजकों को धन्यवाद करता हूँ कि मुझे यहाँ आने का अवसर दिया। राष्ट्र का भला सुधांशु महाराज जैसे सन्त अधिक कर सकते हैं।

लाल कृष्ण अडवानी
(अध्यक्ष-भारतीय जनता पार्टी)

गुरु का द्वार

परम पूज्य आचार्य यशपाल सुधांशुजी महाराज

प्रथम संस्करण : 1997

मूल्य : दस रूपये

विश्व जागृति प्रकाशन
बी. पी. 77, मौर्य एन्कलेव,
पीतम पुरा, दिल्ली – 110034
दूरभाष : 7211395, 7222400

Printed by : **VIBA PRESS PVT. LTD.,**
122, DSIDC Sheds, Okhla Industrial Area,
Phase-I, New Delhi-110020
Phone :6818025, 6817433, 6428515, 6470666
Fax :6470666
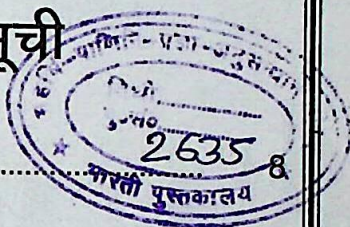
विषय सूची
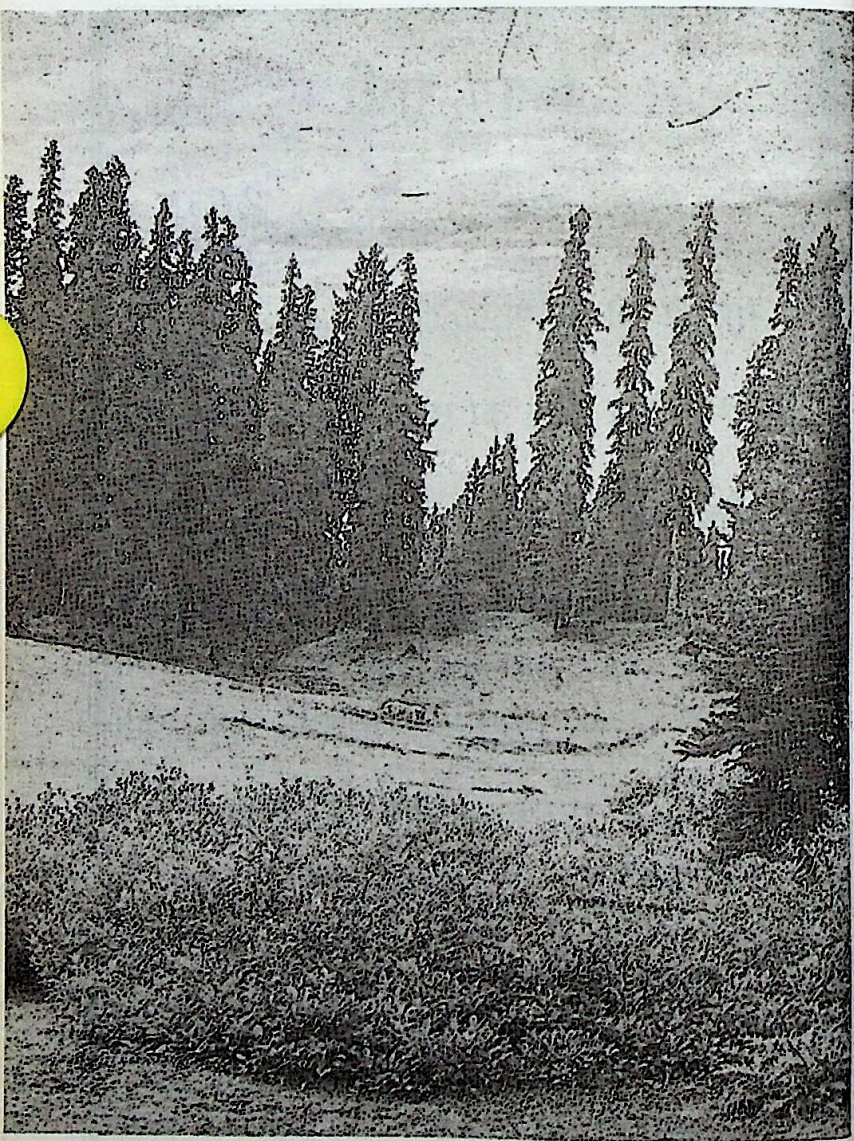
मेरी प्रार्थना सुनो

ओ आत्मा की उज्जवलता
ओ साक्षात् सत्य
ओ सांई !
ओ सर्वोत्कृष्ट 'एक' !
तुम मेरे हो
जानता हूँ, तुम अन्य करोड़ों के हो।
परन्तु जहाँ तक तुम मुझमें निवास करते हो
तुम मेरे हो।
मैं तुम्हारा हूँ
जानता हूँ, अन्य करोड़ों तुम्हारे हैं
परन्तु जहाँ तक मैं तुम में निवास करता हूँ
मै तुम्हारा हूँ।
ओ सांई !
मेरी प्रार्थना सुनो
यह है मेरी प्रार्थना
मेरे कदमों को मेरे अस्तित्व (सत्) की ओर ले चलो
मेरे अन्धकार को प्रकाश की ओर ले चलो
मेरी मर्त्यता को
अमरता की ओर ले चलो
यही मेरी प्रार्थना है, कृपा करो कि ये पूरी हो।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओ३म्

सामर्थ्यवान गुरुवर

आध्यात्म साधना के हेतु प्राचीनकाल से सद्‌गुरू और शिष्य के जो लक्षण, कर्त्तव्य और परम्परायें प्रचलित रही हैं उन्हीं को शास्त्रीय दृष्टि से आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें किञ्चित भी हम अपनी तरफ से मिश्रण नहीं कर रहें। प्रत्येक दीक्षार्थी के लिये यह लेख पठनीय है।

-सम्पादक

जों परमात्मा तुम्हारे अन्तर में है उसे आध्यात्मिक आनन्द का तत्काल दर्शन कराने वाला, ईश्वर से मिलाने वाला सदगुरू दीक्षा गुरू होता है। साधक को आत्म–ज्ञान की दीक्षा का फल–आत्म प्रतीति, विश्वास और गुरूप्रदत शक्ति का सामर्थ्य जानना आवश्यक है। शिष्य की योग्यता ही गुरू का गुरूत्व और शिष्य का शिष्यत्व सिद्ध करता है।

गुरू पद का महान पुरूष त्यागी तपस्वी होता है। ज्ञान मार्ग में सत्यता, सरलता और शुद्धता ही फलीभूत होती है। उत्तम गुण वाले सद् शिष्य और श्रद्धावान अति भक्त को जो ज्ञान दिया जाता है। वही शास्त्र के अर्थ का प्रकाशक होता है।

सदगुरू के लक्षण

कलार्णव तंत्र त्रयोदश, उल्लास

श्री गुरूः परमेशानि शुद्धवेशो मनोहरः।
सर्वलक्षण सम्पन्नः सर्वावयव शोभितः।।
सुमुखः सुलभः स्वच्छो भ्रमसंशय नाशकः।
इंगिताकारवित् प्राज्ञः ऊहापोहविचक्षणः।।

जिसका वेश शुद्ध वस्त्र से सुशोभित एवं मनोहर हो, जो शारीरिक सब अवयव से सुन्दर तथा शुभ लक्षण सम्पन्न हो, जो प्रसन्न वदन हो, शास्त्र के सिद्धान्त के अनुकूल और प्रतिकूल विचार में विचक्षण हो, जो इशारे से ही तत्व को समझ सके, जिसके कथन से कठिन से कठिन विषय भी सहज ही समझ में आ जाये और भ्रम संशय दूर हों, ऐसा उत्तम पुरूष ही तत्वज्ञान की दीक्षा का उपयुक्त गुरू है।

अन्तर्लक्ष्यो बहिर्दृष्टि सर्वज्ञो देश कालवित्।
आज्ञा सिद्धिस्त्रिकालज्ञो निग्रहानुग्रहक्षमः।।
अग्रगण्योऽतिगम्भीरः पात्रापात्र विशेषवित्त।
शिव विष्णु समः साधुमनुभूषण भूषितः।।

जिसकी दृष्टि बाहर रहते हुए भी लक्ष्य अन्तर में होता है, जो सर्वज्ञ एवं देशकाल को जानने वाला त्रिकालदर्शी है, सिद्धियां जिसकी आज्ञा में हैं। जिस किसी को जो आज्ञा देता है सो सिद्ध होती है, जो पुरूष कृपा करने और दण्ड देने में समर्थ है और अपना सामर्थ्य जब चाहे देकर ले सकता है। जिसकी दृष्टि आज्ञा चक्र में स्थित रहती है, जो आत्म सामर्थ्य से दूसरों में शक्ति संचार करता है एवम् ज्ञान का बोध कराता है। जो शान्त है, सब जीवों पर दया

करता है, जो जितेन्द्रिय है। जो सब कामों में अपना प्रथम स्थान रखता है, अति गम्भीर है, पात्रापात्र की विशेषता को जानता है, जो साधु को भूषण सद्गुणों से भूषित है,ऐसा उत्तम पुरूष ही योग दीक्षा के लिये योग्य गुरू है।

निर्ममो नित्य सन्तुष्टः स्वतंत्रोऽनन्तशक्तिमान्।
सद्भक्त वत्सलो धीरः कृपालुः स्मितपूर्णवाक्।।
नित्येनैमित्तिकेकाम्ये रतः कर्मण्यानिन्दिते।
रागद्वेष भय क्लेश दम्भाहंकारवर्ज्जितः।।

जो पुरूष ममता रहित, नित्य सन्तुष्ट, स्वतंत्र और अनन्त शक्ति वाला है, जो सद्भक्तों में स्नेह सम्पन्न और कृपालु तथा हास्यपूर्ण सुखद वाणी बोलता है, जो राग, द्वेष, भय, क्लेश, दम्भ अहंकार से रहित हो कर नित्य नैमित्तिक तथा अनिन्दित काम्य कर्म में रत है, जो दैव इच्छा से प्राप्त आय से सन्तुष्ट है, ऐसा शुभ लक्षणों से युक्त उत्तम पुरूष ही ब्रह्म ज्ञान की दीक्षा के योग्य गुरू है।

नरवद् दृश्यते लोके श्री गुरू पाप कर्मणा।
शिववद् दृश्यते लोके भवानि पुण्यकर्मणा।।
श्री गुरू परमं तत्वं तिष्ठन्तं चक्षुरग्रतः।
मन्द भाग्या न पश्यन्ति हयान्धाः सूर्यमिवोदितम्।।

पाप कर्म वाले लोग गुरू को मनुष्य रूप में देखते हैं। परन्तु पुण्य कर्म वाले लोग श्री गुरू को शिव रूप से देखते हैं। साक्षात् परमतत्व श्री गुरू को नेत्र के सामने प्रत्यक्ष रहते हुए भी, भाग्यहीन मनुष्य नहीं देखते जैसे अन्धे लोग उदय हुए सूर्य को नहीं देखते।

गुरू ही उपदेशक रूप को ग्रहण करके जीव के बन्धनों को जड़ से काटकर परमपद को प्राप्त कराते हैं क्योंकि सब के ऊपर अनुग्रह करने वाले करूणानिधि ईश्वर ही आचार्यत्व धारण करके दीक्षा द्वारा जीव को मुक्ति प्राप्त कराते हैं। वही शिव गुरू रूप में

स्थित होकर पूजा ग्रहण करते हैं और एकरूप ग्रहण करके संसार बन्धन का नाश करते हैं।

गुरू के द्वारा ही तुम ईश्वर से मिलोगे। वैसे तो यह परमानन्द तुम्हारे अन्तर में ही है। उसे तुम अपने परम पुरूषार्थ से भी पा सकते हो, पर उसमें तुम्हें वर्षों तो क्या, कई जन्म लग जायेंगे। अब तुम जिस दशा को पहुँचे हो उसमें ऐसा प्रबल पुरूषार्थ तुम्हारे लिये सहज नहीं है, इसलिये केवल गुरू कृपा से ही इसी जन्म में पाने की आशा कर सकते हो। वह गुरू भी योग्य सामर्थ्य वाला होना चाहिए और साथ ही तुम्हारी भी अच्छी योग्यता होनी चाहिए। तुम चाहो कि हमें व्यास और वसिष्ठ जैसे गुरू मिल जायें। तो तुम्हें भी उनके शिष्य रामचन्द्र और जैमिनि जैसी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। नहीं तो तुम जैसे हो वैसे ही गुरू भी तुम्हें मिलेंगे। तुम्हारी योग्यता ही तुम्हें गुरू को प्राप्त करायेगी।

अतएव व्यास , वशिष्ठ, शक्ति, पराशर जैसे गुरू की तुम इच्छा रखते हो तो तुम्हें भी शुकदेव, जैमिनि, गौड़पाद, गोविन्द–पाद, शंकराचार्य जैसी योग्यता प्राप्त करनी होगी। तब बिना प्रयत्न के ही व्यास जैसे गुरू तुम जहाँ होंगे वहाँ मिल जायेंगे। यदि तुम अकर्मण्य, प्रमादी, आलसी रहोगे तो तुम्हें वैसे ही पशु सदृश्य संसार में बांधने वाले गुरू मिलेंगे। इसलिये पहले तुम योग्य शिष्य होने के लक्षण जान लो और योग्य बनो। पीछे गुरू से प्राप्त ज्ञान भी समझ लो और आत्म ज्ञान की दीक्षा का फल–आत्म–प्रतीति, विश्वास और गुरू प्रदत्त शक्ति का सामर्थ्य लक्ष्यार्थ बोध इत्यादि–तुम्हें जानना आवश्यक है। क्योंकि समधर्मी न होने से मेल नहीं हो सकता, इसलिये गुरू को उपयुक्त शिष्य और शिष्य के उपयुक्त ही दीक्षा दी जाती है, जिसका फल तत्काल, क्रम से अथवा विलम्ब से मिलता है। पहिले ही कहा जा चुका है कि अच्छे समर्थ

गुरू के लिये तपस्या करनी पड़ती है, वैसे ही उपयुक्त शिष्य के लिये भी गुरू को अनुसन्धान करना पड़ता है। शिष्य की योग्यता ही गुरू का गुरूत्व और शिष्य का शिष्यत्व सिद्ध करती है। जैसे योग्य वैद्य से चिकित्सा कराने वाले रोगी वैद्य को आत्म–समर्पण करके अपना जीवन–मरण वैद्य के अधीन कर देता है, वैसे ही भव–व्याधि–ग्रस्त शिष्य का मंगल–अमंगल भवरोग चिकित्सक गुरू के अधीन होता है। वैद्य का परम कर्त्तव्य है कि रोगी को उपयुक्त चिकित्सा से रोग मुक्त कर दे। गुरू का भी परम कर्तव्य है कि शिष्य का अपने आत्म सामर्थ्य से कल्याण कर दे। अतएव गुरू शिष्यों को अपने जीवन–यात्रा निर्वाह की वृत्ति न बनावे और शिष्य भी गुरू को मात्र उपदेश देने वाला ही पर्याप्त न समझे वरन् अपना कर्तव्य यथेष्ट रूप से पालन करे। इस प्रकार कर्त्तव्य बोध से गुरू–शिष्य दोनों ही आत्मभाव से मंगल को प्राप्त होवें, यही परम्परा का नियम है।

गुरू शिष्य का यह आत्म–सम्बन्ध शास्त्र की दृष्टि से अतीव महत्त्व का है। अतएव सोच–समझकर दोनों को सम्बन्ध करना चाहिए, नहीं तो दोनों ही अधोगामी होंगे। शास्त्र की मर्यादा की रक्षा बिना किये कोई अपने अभीष्ट की सिद्धि नहीं कर सकता।

कुलार्णव तंत्र, चतुर्दश उल्लास

गुरूशिष्याधिकारार्थं विरक्तोऽपिशिवाज्ञया।
किंञ्चित्कालं विधायेत्थं स्वशिष्याय समर्पयेत्।।१।।
तस्यापि नाधिकारस्य योगः साक्षात् परे शिवे।
देहान्ते शाश्वती मुक्तिरिति शंकरभाषितम्।।२।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन साक्षात् परशिवोदितम्।
सम्प्रदाय परिच्छिन्नं सदा कुर्यात् गुरूं प्रिये।।३।।
शक्तिसिद्धिमसिद्धार्थं परीक्ष्य विधिवत् गुरू।
पश्चादुपदिशेन्मन्त्रमन्यथा निष्फलं भवेत्।।४।।

जगत् में जो—जो महानपुरूष गुरू पद में आये हैं वे सब त्यागी और तपस्वी हुए हैं। उन्होंने सांसारिक सुख का त्याग ही किया है। जिनको परमानन्द स्वरूप आत्मा—सुख की प्राप्ति हो गई है, वे जगत् के सुख की वाञ्छा नहीं करते। यद्यपि उनके प्रारब्धानुसार भौतिक सुख स्वतः ही आ जाता है, तथापि वे मन से उसका त्याग ही करते हैं। उसे वे स्वेच्छा से नहीं भोगते। दूसरों के हित के लिये, देश कालानुसार, अनिच्छा और पर इच्छा से भोगते हैं। जिनके पास अधिक से अधिक सुख और महान से महान सामर्थ्य होता है वे उसके पक्ष में उतना ही त्याग स्वीकार करते हैं और उसी में उसकी महानता होती है। कुबेर जिनका भण्डारी है, साक्षात् अन्नपूर्णा देवी जिनकी गृहलक्ष्मी है, जो अणिमादि महा ऐश्वर्य वाले जगत् के स्वामी हैं, ऐसे परम कृपालु शिवजी भिक्षाटन करके त्याग की महानता का प्रदर्शन करते हैं।

शिवजी की आज्ञा से गुरू विरक्त होने पर भी, शिष्य के अधिकार के लिये थोड़ा ठहर कर, शिष्य से परीक्षा करके, तब शक्ति दान करें। जिसका योग में अधिकार नहीं है ऐसा शिष्य साक्षात् पर—शिव में योग नहीं कर सकता। श्री महेश्वर कहते हैं कि जो शिष्य अधिकारी हैं उसकी देहान्त में शाश्वती मुक्ति हो जाती है। अतएव जैसा महेश्वर ने कहा गुरू प्रयत्नपूर्वक शिष्य का अधिकार देखकर तब कृपा करें। शिष्य भी गुरू की परीक्षा करके परम्परागत सामर्थ्य वाले को ही गुरू करें। शक्ति की सिद्धि व्यर्थ न हो, इसलिये गुरू को चाहिये कि शिष्य की विधिवत् अच्छी तरह परीक्षा करके पश्चात् मंत्र उपदेश करें अन्यथा निष्फल होगा।

गुरू शिष्यावुभौ मोहादपरीक्ष्य परस्परम्।
उपदेशं ददद् गृह्णन् प्राप्नुयातां पिशाचताम्।।५।।
अशास्त्रीयोपदेशञ्च यो गृह्णाति ददाति हि।
भुञ्जाते तावुभौ घोरे नरकानेकविंशतौः ।।६।।

अन्यायेन तु यो वद्याद् गृहणात्यन्यायतश्च यः।
ददती गृह्णाति देवि कुल शापो भविष्यति ।।७।।

यदि मोह से गुरू और शिष्य परस्पर परीक्षा न करके उपदेश देवें और लेवें तो ऐसे उपदेश देनेवाले गुरू एवं लेने वाले शिष्य दोनों ही पिशाचता को प्राप्त होते हैं। अध्यात्म–पथ और कार्य–अकार्य की विधि का निर्णय शास्त्र ही करते हैं। शास्त्र विधि को न मानकर जो अशास्त्रीय उपदेश देते हैं वे ज्ञान का उपदेश देने वाले गुरू और लेने वाले शिष्य घोर नरकगामी होते हैं। अन्याय से जो गुरू शिष्य और शिष्य गुरू करते हैं ऐसे उपदेश देने वाले गुरू और लेने वाले शिष्य दोनों को ज्ञान के पथ में मिथ्या व्यवहार के कारण ब्रह्म शक्ति का शाप लगता है। प्रतारणा से दिये हुए उपदेश और लिये हुए ज्ञान का फल विपरीत हो जाता है। ज्ञान के मार्ग में सत्यता, सरलता और शुद्धता ही फलीभूत होती है। विधि वाक्य का उलंघन करके स्वेच्छाचारिता से किये गये कर्मों का फल भी विपरीत हो जाता है।

ज्ञानेन क्रियया वापि गुरूः शिष्यं परीक्षयेत्।
संवत्सरं तदर्द्धं वा तदर्द्धं वा प्रयत्नतः।।८।।
धनेच्छाभयलोभाद्यैरयोग्यं यदि दीक्षयेत्।
देवता शापमाप्नोति कृतञ्च निष्फलं भवेत्।।६।।

इसलिये गुरू को चाहिए कि प्रयत्न करके शिष्य की ज्ञान से, क्रिया से, अच्छी तरह एक वर्ष, छः मास, कम से कम तीन मास परीक्षा करके तब दीक्षा दें। धन की इच्छा से या किसी के भय से अथवा लोभ से गुरू के अयोग्य शिष्य को शिक्षा दे देने से देवताओं का शाप लगता है जिससे किया हुआ सब निष्फल हो जाता है। श्री महेश्वर के कथनानुसार शिव शासन की रक्षा करना गुरू और शिष्य दोनों का कर्त्तव्य है।

गुरू साक्षात् शिव रूप है

यः शिवः सर्वगः सूक्ष्मो निष्कलश्चोन्मनाव्ययः।
व्योमाकारो ह्यजोऽनन्तः सकथं पूज्यते प्रिये ।।१३।।
अतएव शिवः साक्षाद् गुरू रूपं समाश्रितः।
भक्तया सम्पूजयेद्दैविभुक्तिं मुक्तिं प्रयच्छति।।१४।।
शिवोऽहमाकृतिर्द्दैवि नर दृग्गोचरो न हि।
तस्मात् श्रीगुरूरूपेण शिष्यान् रक्षति सर्वदा।।१५।।

जो परमात्मा शिव, अनन्त, अव्यय, अजं, निष्कल, व्योमाकार, मनरहित सर्वत्र सूक्ष्म है, वह कैसे पूजा जा सकता है? अतएव साक्षात् शिव ही गुरू रूप का आश्रय करके भक्ति द्वारा पूजित होता है और भुक्ति तथा मुक्ति देता है। मेरी शिव रूप आकृति मनुष्य के दृष्टि गोचर नहीं हो सकती, इसलिये गुरू रूप को धारण करके मैं ही शिष्यों की सर्वदा रक्षा करता हूँ।

मनुष्यचर्मणा बद्धः साक्षात्परशिवः स्वयम्।
स्वशिष्यानुग्रहार्थाय गूढं पर्य्यटति क्षितौ।।१६।।
सद्भक्तरक्षणायैव निराकारोऽपि साकृतिः।
शिवः कृपानिधिर्लोके संसारीवविचेष्टितः।।१७।।
नरवद्दृश्यते लोके श्री गुरूः पाप कर्मणा।
शिववद् दृश्यते लोके भवानि पुण्यकर्मणा ।।१८।।

साक्षात् परशिव स्वयं मनुष्यरूप से अपने शिष्यों पर अनुग्रह करने के लिये अपने को छिपाकर पृथ्वी पर विचरते हैं। वही परम शिव, निराकार होते हुए भी, सद्भक्तों की रक्षा करने के लिये गुरू रूप साकार बनकर कृपानिधि संसारी के सदृश्य चेष्टा करते हुए दीख पड़ते हैं। पाप कर्म वाले लोग गुरू को मनुष्य रूप में देखते

हैं, परन्तु पुण्य कर्मवाले लोग श्री गुरू को शिव रूप से देखते हैं।

श्री गुरूं परमं तत्त्वं तिष्टन्तं चक्षुरग्रतः।
मन्दभाग्या न पश्यन्ति ह्यन्धाः सूर्यमिवोदितम्।।१६।।
गुरूः सदा शिवः साक्षात्सत्यमेव न संशयः।
शिवरूपी गुरूर्नोवेद्भुक्ति मुक्तिं ददाति कः।२०।।
सदा शिवस्य देवस्य श्री गुरोरपि पार्वेति।
उभयोरन्तरं नास्ति यः करोति स पातको।।२१।।

साक्षात् परमतत्त्वस्वरूप श्री गुरू को नेत्र के सामने प्रत्यक्ष रहते हुए भी भाग्यहीन मनुष्य नहीं देखते, जैसे अन्धे लोग उदय हुए सूर्य को नहीं देखते। अतएव यह सत्य है कि गुरू ही साक्षात् सदा शिव रूप है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। क्योंकि यदि गुरू ही सदा शिव रूप न होते तो भुक्ति और मुक्ति कौन दे सकता? इसलिये सदा शिव और श्री गुरू देव इन दोनों में कोई भेद नहीं है, परन्तु जो लोग भेद देखते हैं वे पापी हैं।

देशिकाकृतिमास्थाय पशुपाशनशेषतः।
छित्त्वा परं पदं देवि नयत्येवमतो गुरूः।।२।।
शिव रूपं समास्थाय पूजां गृहलाति पार्वति।
गुरूरूपं समादाय भवपाशान्निकृन्तयेत् ।।२३।।
सर्वानुग्रहकत्तृत्वादीश्वरः करूणानिधिः।
आचार्यरूपमास्थाय दीक्षया मोक्षयेत् पशून् ।।२४।।

गुरू ही उपदेशक रूप को ग्रहण करके जीव के बन्धनों को जड़ से काटकर परम पद् को प्राप्त कराते हैं, क्योंकि सब के ऊपर अनुग्रह करने वाले करूणानिधि ईश्वर ही आचार्यरूप धारण करके दीक्षा द्वारा जीव को मुक्ति प्राप्त कराते हैं। वही शिव गुरू रूप में

स्थित होकर पूजा ग्रहण करते हैं और गुरू ग्रहण करके संसार बन्धन का नाश करते हैं।

प्राणतोष्णी तत्र, षष्ठ काण्ड, परिच्छेद ३

नाना विकल्प विभ्रान्ति नाशन्तु कुरूते च यः।
सद्गुरूः स तु विज्ञेयो न तु स्वैरप्रजल्पकः ।।१।।
अतएव महेशानि सद्गुरूः स शिवोदितः।
सत्यवादी सत्यशीलो गुरूभक्तो दृढव्रतः।।२।।
स्वल्पाचाररतात्मानो दानादिशीलसंयुक्तः।
कापट्यलोभविन्यासी महावंश समुद्व।।३।।
इदृशः सद्गुरूस्तस्य संगतो यत्नवान्भवेत्।
तदेव मनसा शान्तिं प्राप्नोति परमं पदम्।।४।।

श्री महेश्वर कहते हैं कि जीव के बन्धन का मूल कारण मन के ही संकल्प–विकल्प हैं। विकल्प रूप भ्रान्ति के उदय से बन्धन और उसके अस्त से चित्त लय होने पर मोक्ष की होती है। इसलिये जो गुरू शिष्य के चित्त को लय (समाधि) अवस्था में पहुंचा कर नाना विकल्प रूप भ्रान्ति का नाश करने में समर्थ हैं, उनको ही सद्गुरू जानना चाहिये।शास्त्र की बातें बहुत बनाने वाला मनुष्य गुरू नहीं होता है। इसलिये हे महेशानि ! मैंने स्वयं सद्गुरू के लक्षण कहे हैं कि सद्गुरू सत्यवादी, सत्यशील, गुरूभक्त, दृढ़ व्रत, सूक्ष्म आचार वाले और आत्मारत दानादि गुणों से युक्त, कपट तथा लोभादि से रहित और उत्तम कुल में उत्पन्न हुए होते हैं मनुष्य को चाहिए कि ऐसे लक्षण देखकर सद्गुरू को पहिचान लेवे और यत्नपूर्वक उनका सत्संग करे। तभी उनकी कृपा से मन की शान्ति और परम पद की प्राप्ति होती है।

गौतमीय तंत्र

विष्णोः सम्पर्कः सम्यक् त्रिविधोत्पात्पात्कर्मणि।
षट् चक्र-भेद कुशलः षडध्व-ज्ञान-पारगः।।
पिण्डे पदे तथा रूपे रूपातीते विवेचकः।।१।।
संध्यात्रयविशेषज्ञो ह्यध्वषट्क-विशोधकः।
मंत्र चैतन्य विज्ञाता गुरूभक्तः स्वयंभुवः।।२।।
मंत्र तंत्रार्थं चैतन्यः कुण्डलिगति वेदकः।
मंत्र सिद्धान्तविधिवत् गुरूर्भवति नापरः।।३।।

आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक त्रिताप से संतप्त सांसारिक मनुष्यों को सम्यक् रूप से जो सद्गुरू श्री विष्णु भगवान की शरण में पहुंचा देते हैं, जो सुषुम्ना मार्ग में स्थित षट् चक्रों का भेदन करने में कुशल हैं और षडध्व, अर्थात् वर्ण पद, मंत्र–कला, भुवन और तत्त्व के ज्ञान में पारंगत है और कुण्डिलिनी शक्ति, पद, हंस–रूप–बिन्दु एवं रूपातीत परब्रह्म का विवेचन करने की क्षमता रखते हैं, संध्या त्रय के विशेष ज्ञान को जानते हैं, जो षड् चक्र के मार्ग की शुद्धि रखने में समर्थ हैं, मंत्र चैतन्य के जानने वाले हैं, ऐसे पुरूषों को मुझ स्वयंभू ने गुरू कहा है। मंत्र तथा तंत्र के रहस्य को, उनके चैतन्य भाव की जागृत कुण्डलिनी शक्ति की गति को और मंत्र सिद्धि के साधन के कौशल को जो विधिवत् जानते हैं, वे ही गुरू हैं, और दूसरे मनुष्य गुरू नहीं हो सकते।

दीक्षा का स्थान

मंत्र योग संहिता

गोशालायां गुरोर्गेहे देवागारे च कानने।
पुण्यक्षेत्रे तथोद्याने नदीतीरे च दीक्षणम् ।।१।।
धात्रीविल्वसमीपे च पर्वताग्रगुहासु च।
गंगायास्तु तटे वापि कोटिगुणं फलं भवेत् ।।२।।
अथवा गुरूरेवास्य दीक्षयेद् यत्र तच्छुभम्।
गुरोः परतरं नास्ति तद्वाक्यं श्रुतिसन्निभम्।।३।।

जिस दीक्षा से गुरू शिष्य को आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध कराते हैं, उसको ग्रहण करने के लिये शास्त्र में स्थान और समय का विधान है। इसलिये उत्तम समय में दीक्षा ग्रहण करने से शिष्य के सब अभीष्ट की सिद्धि होती है।

दीक्षा के लिये प्रशस्त स्थान गोशाला, गुरू गृह (जहां गुरू निवास करते हों) देवालय, वन (एकान्त अरण्य), पुण्य क्षेत्र (तीर्थ स्थान) अथवा उद्यान (बगीचा) या नदी के तट पर दीक्षा होनी चाहिये अथवा आंवला एवं विल्ववृक्ष के नीचे हो सकती है, पर्वत पर अथवा गुफा में दीक्षा लेनी चाहिए अथवा गंगा के तट पर किसी भी स्थान में दीक्षा लेना सर्वोत्तम है, क्योंकि गंगा तट के सभी स्थान तीर्थ रूप हैं, परन्तु गुरू इच्छा करके जहां कहीं दीक्षा दें वही स्थान सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि गुरू से बढ़ कर कोई तीर्थ नहीं है। उनका वाक्य ही वेद वाक्य तुल्य है।

दीक्षा का समय

मंत्र योग संहिता तथ तत्त्वसागर

यदि भाग्यवशेनैव सिद्धो हि पुरूषो मिलेत्।
तदैव दीक्षा गृहणील्यात त्यक्त्वा काल विचारणाम्।।१।।
दुर्लभे सद्गुरूणाञ्च सकृत् संग उपस्थिते।
तदनुज्ञा यदा लब्धा स दीक्षावसरो महान्।।
यदैवेच्छा तदा दीक्षा गुरोराज्ञानुरूपतः।।२।।
न तीर्थं न व्रतं होमो न स्नानं न जप क्रिया।
दीक्षायाः कारणं किन्तु स्वेच्छा प्राप्तेतु सद्गुरौ ।।३।।

साधारणतया शास्त्र के कथनानुसार व्यवहार में प्रायः लोग यज्ञोपवीत, विवाह आदि शुभकर्म में तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, योग, करण से मुहूर्त देखकर कार्य करते हैं। तीर्थयात्रा, यज्ञ, दान, तप, जप, दीक्षा आदि शुभकर्म में भी शुभाशुभ काल का निर्णय करके कार्य करते हैं। अच्छे काल में अच्छे तिथि, वार, नक्षत्र में अपनी नाम राशि कें अनुसार किये हुए शुभकर्म का अनुष्ठान निर्विघ्नता से संपन्न होता है और उनका वाञ्चछित फल इच्छानुसार मिलता है, इसलिये ज्योतिष द्वारा कालाकाल का निर्णय करके सब ध र्म–कर्म किये जाते हैं और करने भी चाहिए। जो कुछ भी हो परन्तु, यदि सौभाग्यवश गुरू सिद्ध पुरूष मिल जायें तो कालाकाल का विचार न करके उनसे दीक्षा ग्रहण कर लेनी चाहिए, क्योंकि जिस समय सद्गुरू का दुर्लभ संग मिल जाये और जब वे प्रसन्न होकर कृपा करने के लिये तैयार हो जायें एवं शिष्य को दीक्षा के लिये

अनुमति दे दें वही अवसर शिष्य की दीक्षा के लिये श्रेष्ठ समय है अतएव गुरू के आज्ञानुसार जब गुरू शिष्य दोनों की इच्छा हो तभी दीक्षा हो सकती है। स्वयं गुरू कृपा करते हैं तो गुरू की कृपा लाभ करने में कालाकाल का कोई नियम नहीं है।

सामर्थ्य वाले गुरू शास्त्रों और लौकिक व्यवहार के विधि–निषेध से परे होते हैं और जिनपर कृपा करते हैं उन्हें भी विधि निषेध के बन्धन से छुड़ा देते हैं। ऐसे गुरू भाग्य से ही क्वचित किसी को प्राप्त होते हैं, इसलिये साधारणतया लोग सामर्थ्यहीन बाह्य क्रियाकर्म करने वाले गुरूओं से ही दीक्षा लेते हैं और शास्त्र कथनानुसार दीक्षा के पूर्व पवित्र तीर्थादि स्थान देखते हैं और दीक्षार्थ व्रत लेकर स्नान, जप, पूजा, हवन आदि बहुत सी बाह्य क्रिया करते हैं। परन्तु यह सब वास्तविक दीक्षा के मुख्य कारण नहीं हैं। सद्‌गुरू की कृपा होने से शिष्य को प्रायश्चित् के लिये तीर्थ, स्थान, व्रत, जप, हवनादि क्रिया करने की आवश्यकता नहीं होती। सद्‌गुरू प्राप्त होने से शिष्य पर गुरू की कृपा और उनकी इच्छा ही दीक्षा का कारण है।

दीक्षा ग्रहण करने की विधि

वायवीय संहिता

उपगम्य गुरूं विप्रमाचार्यं तत्त्ववेदिनम्।
जापिनं सद्‌गुणोपेतं ध्यानयोगपरायणम् ।।३।।
तोषयेत् तं प्रयत्नेन भावशुद्धिसमन्वितः।
वाचा च मनसाचैव कायेनद्रविणेन च ।।४।।
आचार्य पूजयेत् शिष्यः सर्वदा हि प्रयत्नतः।
हस्त्यश्वरथरत्नानि क्षेत्राणि च गृहाणि च ।।५।।

भूषणानि च वासांसि धान्यानि च धनानि च।
एतानि गुरवे दद्यात् भक्त्या च विभवे सति।।६।।

सब सद्‌गुणों से युक्त, महासामर्थ्य वाले, जप, तप, ध्यान, योग–परायण तत्व को जानने वाले गुरू के पास जाकर शुद्ध मन से कर्मणा, मनसा, वाचा, तन,मन और धन से प्रयत्न करके गुरू की सदा प्रसन्नता लाभ करने के लिये दीक्षा के पूर्व शिष्य को विशुद्ध भाव से गुरू का पूजन करना चाहिए और अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य हो तो भक्तियुक्त होकर हाथी, घोड़ा, रत्न, रथ, क्षेत्र, गृह, आभूषण, वस्त्र, धान्य और धन आदि वैभव देकर गुरू की सेवा करनी चाहिए।

गुरूपुत्रेऽपि तत्पत्न्यै तच्छिश्येऽपि स्वशक्तितः।
वस्त्रालंकरणं यद्याद् भोज्यं मिष्टं यथारूचि।।

गुरू को दक्षिणा देनी ही चाहिए। न्याय से उपर्जित अपने संचित धन का आधा भाग या चौथाई अथवा यथाशक्ति से कुछ भी हो सके भक्तिपूर्वक गुरू को अर्पण करें। धन होते हुए अभाव नहीं दिखाना चाहिए।जो लोग वित्त–शाठ्य करते हैं, 'धन रहने पर भी देना पड़ेगा' ऐसी लोभवृति से गुरू को अभाव दिखाते हैं और अपने धर्म–कर्म तथा अपने मन के वास्तविक भावों को गुरू से छिपाते हैं, उनका अनर्थ ही होता है। उन्हें दीक्षा जनित ज्ञान का कोई फल नहीं होता। इसलिये अपनी शक्ति के अनुसार गुरू को गौ, भूमि, सुवर्ण, वस्त्रादि निवेदन करना चाहिए और गुरू के पुत्र को तथा गुरू की धर्मपत्नी को भी वस्त्र, आभूषण निज शक्ति के अनुसार देना चाहिए। यदि गुरू के स्त्री, पुत्र न हो तो उनके प्रधान शिष्य को देना चाहिए और दीक्षा के दिन सबको यथा रूचि मिष्ठान्न भोजन कराना चाहिए।

स्कन्द पुराण तथा ब्रह्मपुराण

पित्रोरभरणं कृत्वा ह्यदत्त्वा गुरूदक्षिणाम्।
कृतघ्नताञ्च संप्राप्य मरणान्त्ता हि निष्कृतिः।।१।।
विद्यां प्राप्यापि यो मोहात् स्व गुरोः पारितोषिकम्।
न प्रयच्छन्ति निरयंते यान्त्याचन्द्रतारकम्।।१।।

जैसे जन्मदाता माता–पिता का भरण पोषण करना पुत्र के लिये परम कर्त्तव्य है तैसे ही संसार बन्धन से मुक्त करने वाले परम ज्ञान–दाता गुरू की सेवा करना भी शिष्य का परम कर्त्तव्य है। कर्त्तव्य की अवहेलना करके अपने माता–पिता का भरण पोषण नहीं करने से , एवं गुरू से विद्या प्राप्त करके दक्षिणा नहीं देने से मरण पर्यन्त मनुष्य कृतघ्नता दोष से लिप्त रहता है। उस कृतघ्नी का मरण ही निष्कृति है। अतएव जो लोग गुरू ब्रह्मविद्या प्राप्त करके मोहवश अपने गुरू को पारितोषिक दक्षिणा नहीं देते वे प्रलय पर्यन्त नरक रूप दुःख भोगते हैं।

वृहदारण्यक उपनिषद् अ० ३–२१

कस्मिन्नु यज्ञः प्रतिष्ठितः दक्षिणायामिति।
कस्मिन्नु दक्षिणा प्रतिष्ठिता, श्रद्धायामिति।।
यदाह्येव श्रद्धत्ते अथ दक्षिणां ददाति।
श्रद्धायां ह्येव दक्षिणा प्रतिष्ठता।।२१।।
दक्षिणा विहिनो यज्ञः सिद्धिदो न च मोक्षदः।
दक्षिणा यज्ञ पत्नी च दीक्षा सर्वत्र पूजिता।।
यया बिना च विश्वेषु सर्व कर्म च निष्फलम्।

यज्ञ किसमें प्रतिष्ठित है? दक्षिणा में और दक्षिणा किस में प्रतिष्ठित है? श्रद्धा में अर्थात् यज्ञ कैसे फलता है? दक्षिणा देने में और दक्षिणा कैसे फलप्रद होती है? श्रद्धा से फलीभूत होती है।

इसलिये यज्ञ करने वाले यजमान वैदिक यज्ञ कराने वाले ब्राह्मणों को श्रद्धापूर्वक दक्षिणा देते हैं, क्योंकि श्रद्धा में ही दक्षिणा प्रतिष्ठित है अतएव श्रद्धा से दी हुई दक्षिणा सभी यज्ञ के फल को देती है। दक्षिणा विहीन यज्ञ न तो वांछित फल देता है और न मोक्षदायक होता है। अतएव शास्त्रकथनानुसार यह दीक्षा भी एक प्रकार का यज्ञ है। क्रियावती दीक्षा बाह्य यज्ञ है जो बाहर के हवनादि कर्म से संपादित होता है और ज्ञानवती दीक्षा अन्तर यज्ञ है जो गुरू की आत्मशक्ति से संपादित होता है। इसकी दक्षिणा नहीं देने से यह निष्फल होगा इसलिये दीक्षा और दक्षिणा ये यज्ञ की पत्नी है इनके ही संयोग से यज्ञ वांछित फल देता है, इसलिए संसार में दीक्षा और दक्षिणा के बिना जो कोई धर्म–कर्म किया जाये वह सब निष्फल होता है। अतएव वैदिक यज्ञ कर्म में दीक्षित होकर यज्ञ करके दक्षिणा देकर फल प्राप्त किया जाता है। बिना श्रद्धा और भक्ति के दक्षिणा भी निष्फल होती है।

कुलार्णवतन्त्र तथा वायवीय संहिता

सर्वस्वमपियो दद्यात गुरौ भक्तिविवर्जितः।
शिष्यो न फलमाप्नोति भक्तिरेव हि कारणं ।।१।।
आज्ञाहीनं क्रियाहीनं श्रद्धाहीनं वरानने।
आज्ञार्थं दक्षिणाहीनं सदा जप्तं च निष्फलम्।।१।।

जो शिष्य गुरू भक्ति से रहित हैं, वे चाहें अपना सर्वस्व भी गुरू को अर्पण कर देवें तथापि वे दीक्षा का फल नहीं पा सकते, क्योंकि फल प्राप्ति का कारण गुरू भक्ति ही है। इसलिये जो शिष्य गुरू की आज्ञा को नहीं मानता वे और जो क्रिया नहीं करते और श्रद्धाहीन हैं, वे तथा जो गुरू रूप आज्ञा शक्ति ग्रहण करके दक्षिणा नहीं देते ऐसे लोगों के जप, तप आदि कर्म सदा निष्फल होते हैं।

इसलिये शास्त्र कथनानुसार गुरु की सेवा करके प्रसन्नता लाभ की जाये तो गुरू की कृपा का फल पूर्णज्ञान में परिणत होता है एवं शिष्य निर्विघ्नता से अपने अभीष्ट की सिद्धि सहज ही प्राप्त कर लेता है। अन्याय से आत्मप्रतारणा करके, गुरू से महान् उपकार लेके, प्रत्युपकार नहीं करने से, शिष्य में गुरू की संचारिणी शक्ति नष्ट हो जाती है अथवा और ही रूप में परिणित हो जाती है, जिसकी साधना से शिष्य का मन उद्भ्रान्त एवं विक्षिप्त हो जाता है और शान्ति रहित होकर नाना प्रकार के विकल्प पोषण करता है। इसी प्रकार गुरू भक्ति की अवाज्ञा-का तिरस्कार करने से अथवा गुरू में अनास्था होने से शिष्य को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक दुःख हो जाता है, एवं बलात्कार से उनके धन का नाश होता है और बहुत सी आपत्तियां आ पड़ती हैं, क्योंकि अन्याय से ग्रहण की हुई दीक्षा का ज्ञान का फल विपरीत हो जाता है।

जिन गुरू की आत्मशक्ति शिष्य में अष्ट प्रहार क्रिया कर रही है, जिन गुरू की शक्ति के स्मरणमात्र से शिष्य को अष्टांगयोग स्वयमेव होता है, जिनकी शक्ति के कार्य से शिष्य के शरीर, मन, प्राण, बुद्धि विवश होकर अपना अस्तित्व खो देते हैं, जिन गुरू की शक्ति की साधना में कार्याकार्य का कोई विचार नहीं है और न तो किसी और गुरू की वा अन्य ज्ञान की आवश्यकता है शिष्य स्वयं अपना गुरू होता है,जिन गुरू की कृपा से साधक संसार में ही सुखपूर्वक रहकर अनायास धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त करने में समर्थ होता है, ऐसा महाकल्याणकारी साधन होने वाले निर्व्याज करूणाकर गुरू से दीक्षा लेके यदि शिष्य प्रत्युपकार में गुरू की कुछ भी सेवा न करे तो वह महादुर्भागी है। वह कैसे सुखी हो सकता है ?

शिष्य को दीक्षा देने से गुरूओं के अपने आत्मतेज की हानि

होती है, जैसे सर्प विष के नष्ट होने से बलहीन होता है, और पुरूष वीर्य नाश से तेजहीन होता है, तैसे गुरू भी अपने आत्म–सामर्थ्य को व्यय करते रहने से उस समय प्रभावहीन हो जाते हैं, क्योंकि गुरू की दीक्षा से शिष्य के पाप संस्कारों में आघात पहुँचता है एवं उनका नाश होता है, इसलिये वे संस्कार गुरू को आक्रमण करते हैं। गुरू शक्तिमान् है इसलिये वे संस्कार गुरू को आक्रमण करते हैं। गुरू शक्तिमान है इसलिये उनका प्रशासन और नाश भी कर देते हैं, तथापि प्रत्याघात के स्वरूप कुछ समय के लिये गुरू व्याधिग्रस्त भी हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में य़दि गुरू कृपा प्राप्त शक्तिमान् शिष्य उनकी सेवा न करे, तो गुरू के मन में उसके प्रति अनास्था और तिरस्कार आता है जिससे शिष्य का अमंगल होता है। गुरू का मन भी दीक्षा व्यापार से उदासीन हो जाता है। गुरूओं में भी एक ही सिद्ध गुरू के बहुत से शिष्य होते हुए भी सभी एक समान शक्ति सम्पन्न नहीं होते हैं। इसलिये शिष्यों में भी उनकी क्रिया शक्ति के विकास का तारतम्य हो जाता है, जो गुरू सर्व त्यागी हैं एक स्थान पर नहीं रहते हैं उन्हें सेवा की आवश्यकता बहुत कम् होती है, परन्तु जो गुरू गृहस्थी हैं, संसार में रहते हैं– ऐसे पुरूषों को परस्पर सहायता की आवश्यकता होती है, इसलिये शास्त्र में गुरू सेवा करना कहा है। पुराकाल में वशिष्ठादि ऋषि–मुनि और याज्ञवल्क्य आदि योगी गृहस्थी गुरू थे। वर्तमान में बहुत करके साधनसंपन्न शक्ति वाले ही गुरू मिल सकते हैं परन्तु साधन मुक्त सिद्ध गुरू का मिलना अतीव दुर्लभ है, इसलिये दुर्बुद्धि न करके जिन गुरू से उपकृत हुआ जाये उनका बिना विचार किये प्रत्युपकार करना चाहिए।

गुरू का कर्त्तव्य

वायवीय संहिता अध्याय -११

वृथा परिश्रमस्त्तस्य निरयवैव केवलम्।
शक्तिपात समायोगाद् ऋृते तत्त्वानि तत्त्वतः।।
तद्व्याप्तिस्तद् विशुद्धिश्च ज्ञातमेव न शक्यते।।२७।।

शास्त्र कथनानुसार अपने कल्याण के लिये शिष्य गुरू को तन, मन और धन अर्पण करके केवल उनकी कृपा का कांक्षी होकर रहता है, इसलिये शिष्य तो अपने कर्त्तव्य से मुक्त होता है, परन्तु गुरू का महान कर्त्तव्य है कि वह भी दीक्षा द्वारा अपने सामर्थ्य से शिष्य को एकबार ग्रहण करने से गुरू का गुरूत्त्व भार बढ़ जाता है, इसलिये यदि गुरू शिष्य की सेवा लेकर उसका उद्धार न कर सकें तो महापाप के भागी होते हैं। गुरू का परम कर्त्तव्य है कि शिष्य को मोक्ष–प्राप्ति पर्यन्त सर्वदा काल उसके मन, प्राण की गतिविधि का लक्ष्य करके आवश्यकतानुसार अपने आत्म सामर्थ्य से उसकी सहायता किया करें। शिष्य को दीक्षामात्र देने से ही गुरू का कर्त्तव्य शेष नहीं हो जाता है, किन्तु शिष्य के निर्विघ्नता से अपने अभीष्ट की सिद्धि ज्ञान लाभ करने से ही गुरू का कर्त्तव्य निःशेष होता है। यह कर्त्तव्य पालन करने के लिये गुरू को शक्ति संचार करने का सामर्थ्य होना चाहिये, क्योंकि शिष्य में शक्ति संपात नहीं होने से तत्त्व समूह के यथार्थ स्वरूप तथा व्याप्ति और विशुद्धि एवं वास्तविक ज्ञान का कोई भी शिष्य जान नहीं सकता। यह प्रत्यक्ष सत्य है कि ईश्वर की शक्ति गुरू के मध्य होकर शिष्य में संचारित होती है, तो शिष्य में शक्ति के संपति से ही श्री महेश्वर कथित महायोग का ज्ञान स्वयं प्रकोशित होता है। ☐☐☐
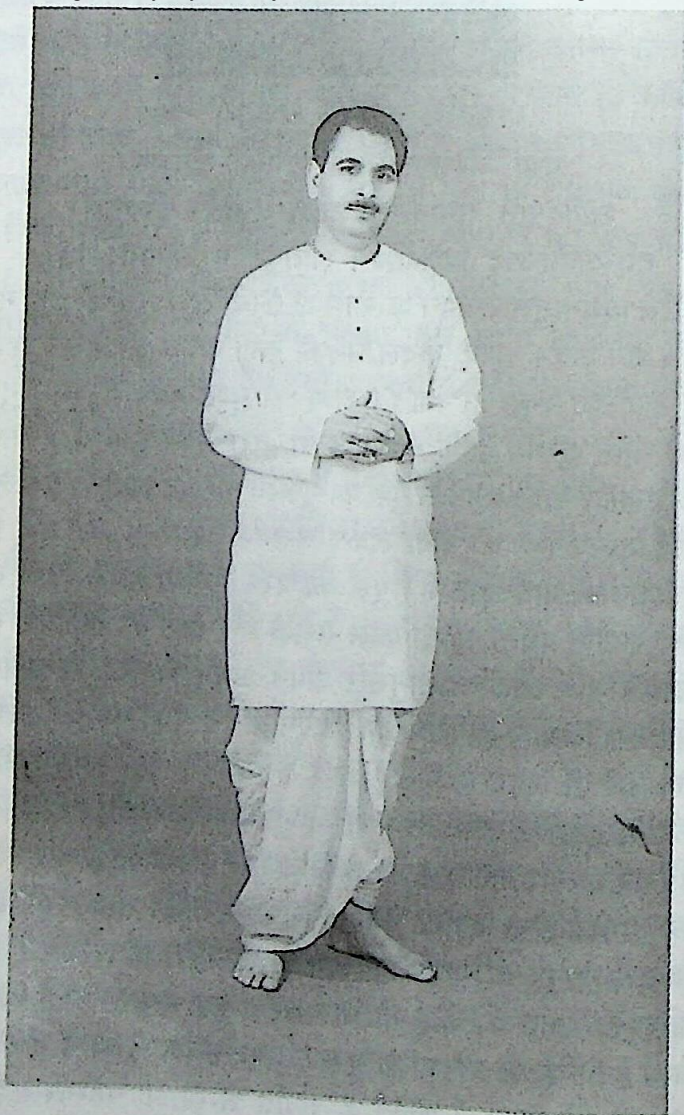
गुरूवर की महिमा

मैने गुरूवर को देखा तो ऐसा लगा।।
जैसे विष्णु स्वरूप, जैसे ब्रह्मा का रूप, जैसे मन्दिर में धूप,
जैसे गंगा का जल, जैसे पूजा स्थल, जैसे मस्ती का पल,
जैसे ज्योति से ज्योति जलाता हुआ...
मैंने गुरूवर को देखा...
जैसे राधा का श्याम, जैसे सीता का राम,
जैसे भक्ति निष्काम
जैसे कोयल का गीत, जैसे मीरा का मीत,
जैसे राधा की प्रीत,
जैसे राम जी का गाथा सुनाता हुआ.....
मैंने गुरूवर को देखा.......
जैसे गुणों का हो सागर, जैसे ज्ञान भरी गागर,
जैसे शान्त महासागर,
जैसे पूजा उत्कृष्ट, जैसे गीता का पृष्ठ,
जैसे मोह माया नष्ट,
जैसे माधव ने अर्जुन को कुछ हो कहा......
मैंने गुरूवर को देखा...
जैसे शीतल पवन, जैसे खिलता चमन, जैसे राम जी का मन
जैसे घटा घनघोर, जैसे दिलों में हो हिलोर,
जैसे श्याम चित चोर
जैसे पर्वत से झरना सा आता हुआ...
मैंने गुरूवर को देखा तो ऐसा लगा...

प्रो० एन० डी० कपूर

मंत्र दीक्षा-गुरू का उपदेश

सभी साधक और साधिकाएं आज अपने जीवन का महत्वपूर्ण दिवस अनुभव करें, कि आज आप सब मंत्र दीक्षा के लिए, गुरू दीक्षा के लिए, परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए, ब्रह्म लोक की सीढियां चढ़ने के लिए, संकल्प बद्ध होने के लिए, यहाँ आये हैं।

सौभाग्य होता है मनुष्य का, जब वो इस साम्राज्य में प्रवेश करने के लिये संकल्प बद्ध होता है। मन में इस तरफ चलने के लिए विचार आएं तो भी मानना चाहिए कि मेरे पिता परमात्मा की बड़ी कृपा हुई, उसने अपनी राह पर चलने का हमें अवसर दिया। जीवन में जितने भी संबध हैं सभी संबधों में सबसे महत्वपूर्ण संबध ा, सबसे पवित्र, सबसे सच्चा, खरा और अच्छा गुरू का संबध है। जो रिश्ते संसार की माया में बाधें और परमात्मा से दूर कर देते हैं उन रिश्तों को महत्वपूर्ण नहीं माना जाता, लेकिन जो संसार की छाया और माया को तोड़कर परमात्मा के प्रकाश और उसके आशीर्वाद को पाने का अवसर दे दें, जन्मजन्मान्तरों में भोगी गई पीड़ा से मुक्ति दिलाकर परम परमात्मा के खजाने को पाने का अवसर दे दे, उससे बढ़कर महत्वपूर्ण कोई नहीं होता है। गुरू का कार्य यही है परमात्मा के समृद्ध खजाने से जीव का सम्बन्ध

जोड़ता है इसलिए संसार के अन्य सब रिश्तों को महत्व नहीं दिया गया। आनन्द की बात तो यह है, गुरू के साथ सारे ही संबध आकर जुड़ जाते हैं जैसे भगवान के साथ सारे ही रिश्ते हैं। अगर गुरू को मित्र मानकर देखोगे तो वह मित्र भी सच्चा मित्र है, गुरू को अगर यह समझें कि वह माता–पिता, बन्धु, सखा, सहयोगी है तो सभी रूपों में गुरू साथ खड़ा दिखाई देगा। इसलिए गुरू को इस रूप में अनुभव कीजिए जैसे आप एक पत्थर की मूर्ति में श्रद्धा भावना रखकर, उसमें अपने भगवान की अनुभूति करने लगते हैं उससे आपको आशीर्वाद भी मिलते हैं, आपकी कामनाएं भी पूरी होती हैं, आप को वरदान भी मिलते हैं। जब आप एक पत्थर में संसार की सर्वोच्च सत्ता का अनुभव कर सकते हैं तो फिर एक चेतन गुरू शरीर में जन्मजन्मान्तरों की तपस्या, साधना को एकत्र किये हुए जो एक प्रकाश पुंज है यदि आप उसमें श्रद्धा रखें तो फिर क्या प्राप्त नहीं हो सकता, परमात्मा का ममतामय रूप देखना हो तो माँ की ममता में देखा जा सकता है। परमात्मा की ममता, वात्सल्य, प्रेम, शान्ति और सखा भाव एक रूप में देखना हो तो वह गुरू में देखा जा सकता है। गुरू में परमात्मा की वह सब कृपाएं जो वह दे रहा है प्राप्त हो सकती हैं जैसे अनेक पत्थर खान से निकलते हैं लेकिन सभी पत्थर कीमती नहीं होते। हीरा तो कोई–कोई होता है। हीरा भी अचानक नहीं बन जाता, हजारों सालों का तप और ताप सहने के बाद वह चमकता है, लेकिन है तो पत्थर। तो मनुष्य के चोले में साधारण आत्मा, महान आत्मा सभी हो सकते हैं। लेकिन लाखों वर्षों की तपस्या, साधना और परमात्मा की कृपा को पाने के बाद जो मानव के रूप में हीरा बनकर रत्न बनकर, उभरता है वही तो सद्गुरू होता है, वही तो कल्याण करता है इसलिए उस सद्गुरू

के सम्मुख बैठने का मतलब क्या है कि अपने आपको भी उन्हीं की तरह देदीप्यमान कर लेना, दीये से जैसे दीया जलता है, अग्नि से अग्नि प्रचण्ड होती है इसी तरह से गुरू के अन्दर जो अग्नि है उस अग्नि से अपने अन्दर प्रकाश करने का नाम ही गुरू दीक्षा है। इसलिए जब आप गुरू दीक्षा के लिए यहां आएं तो समझ लीजिए कि आप अपने बुझे हुए दीये को जलाने के लिए आएं हैं। कहा जाता है कि अगर चलता फिरता तीर्थ देखना हो, चलता फिरता मन्दिर देखना हो तो गुरू के दर्शन करो। उसमें तीर्थ भी है, उसमें मन्दिर भी है। गुरू की कोशिश होती है कि अपने शिष्य के उस कंगाल रूप को खत्म कर दे जिसके कारण वह निराश होता है, दुःखी होता है, गुरू का प्रयास होता है कि उसे उस दौलत से सबंधित कर दे जिसे पाने के बाद व्यक्ति सदैव मुस्कराता है, प्रसन्न रहता है, शांत रहता है, संतुष्ट रहता है और आनन्दित होता है। ब्रह्म ज्ञान ही वह दौलत है जिसे पाने के बाद व्यक्ति के जीवन में सुख और शान्ति आती है और ब्रह्म ज्ञान का उपदेश ही हम ब्रह्मज्ञानी सतों से और गुरूओं से प्राप्त करते हैं। इसलिए आज यह मानकर चलें कि जीवन का यह महत्वपुर्ण दिवस इसी तरह से महत्वपूर्ण है जिस तरह आपका जन्मदिन महत्वपूर्ण है। जन्मदिन को जैसे आप नहीं भूलते उसे हमेशा याद रखते हैं ऐसे ही एक जन्म आपका आज से हो रहा है। माता–पिता के द्वारा दिया जाने वाला जन्म, जन्म लेने वाला बालक होश में नहीं होता। मां से जन्म लेने के बाद धरती पर आया लेकिन उसे अपनी सुध–बुध नहीं होती। गुरू घर में जब जन्म लेता है तो उस समय होशपूर्वक जन्म लेता है। इसलिए यह होश का ही जन्म है यहाँ होश पाने का कार्य ही होता है। होश इस बात की कि जिस तरह से आप अब तक जीते रहे उस क्रम

को तोड़ कर आज से एक निखार शुरू करेंगें। केवल धन कमाना,
पेट भरना और अपने परिवार के इर्द–गिर्द आवश्यकताओं का पूरी करते हुए घुमते रहना ही जीवन का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि जिसे पाने के लिए हम दुनिया में आयें हैं, उस परमात्मा से अपना संबध जोंड़े जो आत्मिक विकास करने के लिए हम संसार में आये हैं वो आत्मिक विकास करें, जो बौद्धिक विकास हमारा ज्ञान के माध्यम से होना चाहिए, वह बौद्धिक विकास करें और जो प्राणों की ऊर्जा शक्ति संसार में जल रही है, खत्म हो रही है उसको जलने न दें। परमात्मा ने जो शरीर का रथ हमें दिया है संसार में यात्रा करने के लिए, इस शरीर रूपी रथ को हम संसार के अन्दर चलते हुए रोग ग्रस्त न बनायें, इसे खराब न होने दें। शरीर भी भगवान का मन्दिर है। हम पांच रूपों में होश धारण करते हैं–शरीर की होश, प्राणों की होश, मन की, बुद्धि की और आत्मा की होश। शरीर को यह मानो कि सौ साल की यात्रा कर संसार में हम आयें हैं इस शरीर को स्वस्थ रखना, नियम में चलाना हमारा कर्तव्य है। दूसरा कर्तव्य है कि हम प्राण शक्ति को ऊर्जावान बनाऐंगें। भोग, शोक, क्रोध, चिन्ता और भय–ये सभी चीजें हमारी प्राण शक्ति को जलाती हैं। हम इससे अपनी प्राण शक्ति को खत्म नहीं होने देंगें। क्रोध करते रहना, चिन्ता करते रहना, भयभीत रहना, शोक में डुबे रहना, शरीर को रोगी बनाए रखना, इससे बचेंगे। ये दूसरे तल पर आपकी जागृति होगी, होश होगी और तीसरी जागृति जीवन की है। आप अपने मन को होश में लाऐंगें। मन को होश में लाने के संबध में यह बात ध्यान से सुनिए कि जब आप का मन निराश होता है तो इसकी सारी की सारी शक्ति खत्म हो जाती है। किसी भी चीज़ को लेकर हम उदास होंगें, निराश होंगें, ऐसा सोचना कि अब क्या

होने वाला है ? जो कुछ जीवन में होना चाहिए था वही नहीं हो पा रहा, हम जो चाहते हैं वह होता ही नहीं, जो होता वह हमारा चाह हुआ है ही नहीं। तो तरह–तरह की निराशा वाली बातें करके हम अपने मन को बुझायें रखते हैं। इसलिए हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम अपने मन को फूलों की तरह खिलखिलाएं। भारत देश में चैत्र से वर्ष का प्रारम्भ माना जाता है और चैत्र से नव वर्ष का प्रारम्भ इसलिए मानते हैं क्योंकि बसन्त ऋतु के आगमन का प्रतीक है। बसन्त ऋतु आई, फूल खिले तो कहते हैं कि वर्ष का प्रारम्भ और जीवन का प्रारम्भ यहीं से होना चाहिए। जीवन में प्रसन्नता खिल जाए जैसे फूल खिलते हैं, कोयल बोलती है, पपीहा गाता है और मोर नाचते हैं। बसन्त ऋतु प्रकृति के उत्सव की सूचना है। बसन्त ऋतु का आगमन हुआ वो इस बात का प्रतीक है कि प्रकृति में बहार आई। कीड़े–मकोड़े, कीट–पंतगे, पक्षी, जीव–जन्तु सब गाने लग गए, सब खिल– खिलाने लगे, सब प्रसन्न हो गए, उत्सव मग्न हो गये जो शिक्षा देते हैं। हे मनुष्य ! तू भी देख तेरे जीवन का नया प्रारम्भ होने लगा है। नया वर्ष प्रारम्भ हुआ है तेरे जीवन का महोत्सव प्रारम्भ हुआ है आज से खिलना और प्रसन्न रहना शुरू कर। जो भी तेरे जीवन में प्रसन्नता हो सकती है उसे प्रकट कर। नागफनी के पौधे में कांटे तो बहुत होते हैं लेकिन उस पर भी बहार आती है। वहां भी फूल खिलते हैं और इंसान का जब भी ध्यान जाता है, नागफनी के कांटो की तरफ ध्यान नहीं जाता। बल्कि जो उसमें सुन्दर फूल खिले हैं उस पर ध्यान जाता है। कैक्टस लगाते हैं न आप लोग, जब उसके अन्दर फूल खिलते हैं तो बहुत अच्छे सुन्दर लगते हैं। ज़िन्दगीं में भले ही कितनी भी समस्यायें हों, अनेक समस्याओं के बीच में भी जो आदमी खिला रहता है। समझो उसके जीवन की

बसन्त ऋतु प्रारम्भ हो गई, उसके जीवन में बहार आ गई और

यही प्रसन्नता धारण का नाम तीसरी उन्नति है। तीसरी उन्नति मानसिक उन्नति है। मन की उन्नति प्रसन्नता भरे रहो और अगर आप किसी न किसी कारण दुःखी होते रहोगे तो एक बात ध्यान रखना। रोग शरीर में घर करेंगे, समस्याओं और संघर्षों से जूझने की शक्ति आपकी कम होती जाएगी, चिड़चिड़ा स्वभाव हो जायेगा। हर आदमी की छोटी सी बात भी महसूस होगी क्योंकि अन्दर प्रसन्नता का स्रोत सूख गया है। इसलिए खुश रहना, गाना, गुनगुनाना, मुस्कुराना यह अपना स्वभाव बनाओ, आदत बनाओ यह तीसरा विकास है। जीवन में यह तीसरी होश है जो हमें आनी चाहिए। चौथी होश हमें इस रूप में आनी चाहिए कि अपनी बुद्धि का विकास करते रहो, कुछ न कुछ पढ़ो। कुछ न कुछ सीखो। कुछ न कुछ जानते रहो। भगवान न मनुष्य को यह गुण दिया है। अपनी बुद्धि विकास का जितना चाहे कर सकता है। जीव–जन्तुओं में इतना विकास करने की संभावनाएं हैं भी नहीं। आप अगर किसी रीछ, भालू को, किसी बन्दर को नाचना, सर्कस में कार्य करना सिखा दें। मोटर–साइकिल चलाना भालू को सिखा दें तो आप उसके पांव बांधकर मोटर–साइकिल चला कर देंगे तो वह चलाता रहेगा उसे गोल गोल। इतनी जानकारी तो उसे हो गई लेकिन जानकारी भी कैसी एक अभ्यास में चीज़ आ गई। लेकिन होश और समझ उसे नहीं है। अब ऐसा नहीं हो सकता कि अगर आप उसको जंगल में छोड़ दें तो भालू अपनी सारी बिरादरी को इक्कठा करके बोले कि भाई मैं मोटर साइकिल चलाना सीख कर आया हूँ। तुम लोग को क्लॉस लगा रहा हूँ। तुम भी सीखना शुरू करो। पशु पक्षी आगे किसी को सिखाते नहीं हैं, न ही वे सीख पाते

हैं, न ही सिखा पाते हैं। उनकी बुद्धि का जो ज्ञान और समझ भगवान ने उनको दी है, जितनी दी है उसमें हल्का सा विकास हो सकता है लेकिन मनुष्य का विकास इतना है कि वह जितना चाहे वह विकास कर सकता है और अगर आप अपने को छोटा करके भाग जाओ तो विकास के द्वार बंद कर लोगे। आनन्द और उमंग प्रसन्नता पैदा नहीं हो पायेगी। कुछ न कुछ सीखो, जानते रहो, अच्छे ग्रन्थ पढ़ते रहो। महापुरूषों का सत्संग करते रहो, सत्संग में बैठते रहो, विकास होगा बुद्धि का तो कहते हैं कि यह जीवन का चौथा विकास है। जिस पर हमारा आज से ध्यान जाना चाहिए। शरीर से स्वस्थ रहना, प्राण शक्ति को खराब नहीं होने देना, मन को अपने प्रबल बनाना, बुद्धि को सीखने के लिए प्रेरित करना यह मानना कि हम विद्यार्थी हैं और विद्यार्थी काल कहीं खत्म नहीं हुआ। पांचवीं चीज़ आत्मा का विकास करें। आत्मा को अन्दर डुबोएं। बुद्धि के लिए ज्ञान की आवश्यता है। मन के लिए प्रसन्नता की आवश्यकता है। प्राणों के लिए संयमन शक्ति की, प्राण्याम की आवश्यकता है। शरीर के लिए व्यायाम, उचित खान–पान और आहार की आवश्यकता है तो यह आत्मा के लिए परमात्मा का भोजन देने की आवश्यकता है। तन को भोजन न मिले तो तन बेकार और प्राण शक्ति को संयम संभालेगें नहीं तो प्राण शक्ति खोखली होगी और निराशा से भर देंगे तो मन खोखला हो जायेगा और बुद्धि को रोककर बैठ जायेंगे, सीखना बंद कर देंगे तो बुद्धि कुंठित हो जायेगी और आत्मा को परमात्मा का भोजन नहीं देंगे, तो आत्मा की शक्ति नहीं बढ़ेगी, निर्बल आत्मा बनाकर बैठे रहिये, अपने घर के ही रोने रोते रहना वे ही कभी पूरे खत्म नहीं होंगें। समस्यायें ही नहीं जायेंगी, आत्मा

बलवान है तो सारी दुनिया की मुसीबतों का आप इलाज ढूंढोगें, सबको खुश रखोगे तो स्वयं भी आनन्द में रहोगे और उसके बाद भी भगवान से कहोगे कि और भी कोई काम देना हो तो दे। मेरे पास बहुत सारा सामर्थ्य है सेवा करने का, क्योंकि तूने मेरे प्रभु मौका दिया है और अगर यह सोच कर बैठ जाओगे कि नहीं, मैं कुछ भी नहीं कर पाऊंगा, घर की समस्याएं ही नहीं खत्म होतीं, तो बाहर का क्या कर पाऊंगा तो आदमी ने कर लिया अपने आप को छोटा, तो आनन्द से भरो अपनी आत्मा को, परमात्मा से जोड़ो और एक बात ध्यान रखना कोई बच्चा ले और उसके माता पिता उसे बोलना न सिखायें, उसके सामने बातचीत न करें तो यह बात ध्यान रखना कि बच्चा कभी बोलना नहीं सीख पायेगा, बोलना ही नहीं आ पायेगा, वाणी उठेगी ही नहीं उसकी। 'आ', 'बा', 'सा' कुछ बोलता तो ज़रूर रहेगा लेकिन सही चीज़ नहीं बोल पायेगा। हमारी यह वाणी परमात्मा को नाम बोल सके इसलिए महापुरूषों के संग बैठो आपको इसे जपना आ जाए, इसे भगवान का नाम पुकारना आ जाए, महापुरूषों के सत्संग का मतलब ऐसे कि जैसे कोई बच्चा अपने माता–पिता का संग करता हुआ उनके संस्कार, उनकी भाषा सीखता है। ऐसे ही गुरू की शरण में बैठने से परमात्मा की वाणी सीखने का अवसर मिलता है। जीभ पर भगवान का नाम आकर बैठ जाता है और सदा के लिए हम भगवान का गुणगान गाने लायक बन जाते हैं और इसलिए यह बहुत अच्छा मौका होता है अपने आप को आनन्दित करने का। तो आज का दिन आपके लिए बड़ा महत्वपूर्ण है और इस महत्वपूर्ण दिन को और अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिए आप ऐसा समझिये कि हर किसी के लिये माना गया है कि जो भी ऊंचा

मनुष्य है पहले कहते थे कि ऊंची बिरादरी वाला है तो कहलाता था—ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि। ब्राह्मणों के लिए विशेष रूप से 'द्विज्' कहा जाता है। 'द्विज्' उस अवस्था में कहा जाता है जब जनेऊ देता था गुरू। जनेऊ संस्कार होता था, तो कहते थे दूसरा जन्म हो गया है और जनेऊ दिया जाता था उस समय जब माता पिता से शिक्षा लेने के बाद वर्ण—उच्चारण आदि सीखने के बाद विद्यार्थी स्कूल में, गुरूकुल में पढ़ने के लिए जाता था तो कहते थे कि अब तक जो जन्म था वह तो दुनियादारी का जन्म था। अब गुरू के घर से नया जन्म शुरू हुआ, क्यों ? क्योंकि विद्या पढ़कर के आयेगा घर में तो इसका मतलब है कि विद्या से ज्ञान से, नया जन्म होगा तो उसको 'द्विज्' कहा जाता था और इससे भी ज्यादा आनन्ददायक बात तो जो ध्यान देनी चाहिए कि 'द्विज्' कहते हैं पक्षी को और 'द्विज्' कहते हैं दांत को और 'द्विज्' कहते हैं ज्ञानी ब्राह्मण को और 'द्विज्' कहते हैं संस्कारी व्यक्ति को। तो ब्राह्मण को 'द्विज्' कहा गया दांत को 'द्विज्' क्यों ? जब जन्म लेता है तो पहला जो जन्म उसका है वह कच्चे दूध वाला होता है, टूटने के बाद में फिर असली वाले दांत जब आते हैं तो फिर वह द्विज़ कहालाता है। दुबारा जन्म जिसका हो जाता है, जिसके दो जन्म हुए हों तो पहले जो दांत होते हैं दूध वाले तो महत्वपूर्ण नहीं होते वे सारा जीवन चलते भी नहीं। ऐसे ही जो इन्सान का पहला जन्म है वह इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि दुबारा जन्म लेना महत्वपूर्ण है पक्षी को द्विज कहा गया है क्योंकि उसके भी दो जन्म होते हैं ! एक जन्म अण्डे के रूप में होता है और फिर आठ दस दिन के बाद उस अण्डे से पक्षी बाहर निकल कर आता है और वही उसका असली जन्म होता है। ऐसे ही कहते हैं कि

हर जीव का पहला जन्म तो शरीर धारण करते ही हो गया। जब

आप संसार में आ गये चलने–फिरने लग गये, बोलने लग गये, होश आ गई, लेकिन उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण जन्म वह होता है जब आप ज्ञान से अपने आप को ओत–प्रोत करते हैं। शिक्षा आती है जीवन में, होश आती है तो गुरू धारण जब आप करते हैं तो आप द्विज कहलाते हैं। आप ने दूसरा जन्म धारण किया। दूसरा जन्म धारण करने का मतलब होगा कि आज से अपने–आपको
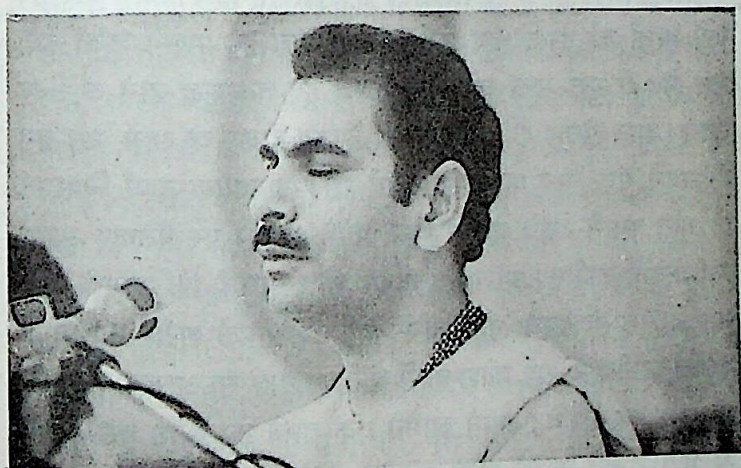
नियमों में बांधोंगे, खाने का, पीने का, उठने का, बैठने का नियम बनाओगे अपनी दिनचर्या ठीक करोगे। आपके पास जो चौबीस घंटे का समय है उसमें कम से कम छः घंटे की अच्छी नींद लो। अगर दस बजे सोते हो तो रात में तो चार बजे उठने का नियम बनाओ। ग्यारह बजे सोते हो तो पांच बजे उठो, बारह बजे सो!ते हो तो छः बजे, वैसे तो रात्रि का ज्यादा से ज्यादा आप ग्यारह बजे से ज्यादा जागने की प्रक्रिया बनाये नहीं। अगर मजबूरी है और

मज़बूरी का कोई अन्त नहीं हो पा रहा तो छः घण्टे की नींद लें। ग्यारह बजे सो गये तो पांच उठ जाओ, साढ़े ग्यारह बजे सोये तो साढ़े पांच बजे उठ जाइये। छः घण्टे अच्छी नींद लेने के बाद पहला कार्य होना चाहिए कि जैसे ही आप जागें, आंखे खोलो तो पहले अपने दोंनो हाथों को देखो अपने हाथों को देखते हुए समझो कि मेरे हाथ में ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं। मेरे भाग्य और कर्म का फल मेरे हाथ में है। मैं अपने स्वयं पर निर्भर करूँ, दूसरो पर नहीं । भगवान मेरे हाथों में शक्ति देना, मुझे सौभाग्य प्रदान करना। ऐसे हाथों को देखते हुए उठें और भगवान को प्रणाम करते हुए, मन मन में गुरू मन्त्र को जाप करते हुए तब शुद्ध होने के लिए जायें। शुद्ध होकर के स्नानसागर से जब होकर के आयें, मन मन में अपने गुरू मन्त्र का जाप करते रहें। आवश्यक कार्य निपटाने के बाद स्नान आदि करके फिर अपने आसन पर बैठकर आराधना करनी चाहिए। आराधना करने का नियम है कि आपके पास जो आसन हो इतना बड़ा होना चाहिए। आपके शरीर की ऊर्जा शक्ति ज़मीन में नहीं प्रवेश होनी चाहिए। बड़ा सा आसन बना कर के उस पर बैठिये। अपने सामने एक ताम्बे का बर्तन रखो पानी से भरा हुआ। उसके छींटे धरती पर लगाने के बाद आंखों पर लगाने के बाद, तीन बार जल पीकर फिर आसन पर बैठना चाहिये। ताम्बा एक बहुत ही सुचालक धातु है, विद्युत की तंरग उसके अन्दर प्रवेश करती है और ज़्यादातर विद्युत धारा के लिए उसका उपयोग किया जाता है। ऐसे ही अपने आपको अधिक तंरगित करने के लिए जल ताम्बे के पात्र में ही पीना चाहिये, लाभ देता है। लेकिन ताम्बे में कोई खटी चीज़ डालकर नहीं खानी चाहिये क्योंकि फिर वह खटास विष बन जाती है। तो इसलिये

इस बात का ध्यान रखें कि ताम्बे के बर्तन में लिया हुआ जल उसे

आप ग्रहण कर लें और अगर जाप करते हुए भजन करते हुए आपको आलस्य आ जाए तो पानी के छीटें मारकर के, आचमन करके फिर से अपना जाप करना चाहिए। आसन पर जैसे ही आप बैठ जायें तो उस समय आपने पहला कार्य करना है जैसे सिद्ध आसन पर हम बैठे हुए हैं चौकड़ी मार के बैठते हैं जैसे वैसे आसन पर बैठना चाहिए। जिनके घुटने मुड़ते हों तकिये का सहारा ले सकते हैं, जिनको पीठ में कोई दिक्कत हो, शरीर साथ न देता हो तो पीछे तकिया लगाकर दीवार के सहारे बैठ सकते हैं। तो पहला कार्य करना चाहिए आसन पर बैठते ही दायां हाथ अपना नीचे रखना चाहिये, बायां हाथ ऊपर, हाथों के दोनों अँगूठे मिला लेने चाहियें। हथेलियां अपनी तरफ करके दोनों हाथों को अपनी तरफ रख लें। ऐसे बैठने के बाद श्वांस भरके ओंकर की ध्वनि का उच्चारण करना चाहिए। सर्वोच्च सत्ता महान शक्ति जिसे 'ओ३म्' कहकर पुकारा गया है, उसका नाम जपना चाहिए। योगी लोग साधना करते हुए ओंकार का जाप और ध्यान करते हैं। इसीलिए भारतवर्ष में जितने भी धर्म, मत, पंत उत्पन्न हुए सभी ग्रन्थों में ओ३म् अक्षर को महत्व दिया गया हिन्दुओं की जितनी भी धार्मिक क्रियाऐं होती हैं, जितना मंत्र उच्चारण होगा तो पहले 'ओ३म' बोलते हैं। बौद्ध हैं वे भी ओंकार का उच्चारण करते हैं 'ओ३म नमों ....आदि। 'ओ३म्' का जाप करते है। जैन लोग 'नमोःकार' का मन्त्र जपते हैं तो उसमें भी ओ३म् लगाकर के पहले बोलते हैं। इसी तरह से सिख समुदाय में किसी भी पाठ को करेंगे तो एक 'एक ओंकार सत्नाम' का जाप करके उसके बाद में अगली प्रक्रिया करते हैं तो आप सोचिये प्राचीन काल से लेकर आज तक

सभी प्रकार के मांगलिक पाठ में ओ३म् का उच्चारण आवश्यक है। तो आप भी साधना में चलने के लिए भगवान की आराधना करने के लिए सबसे पहले ओ३म् का उच्चारण करेंगे। 'ओ३म्' में तीन अक्षर हैं अ, ऊ और म। 'अ' से मतलब है ब्रह्मा, जो संसार को खोलते हैं, आप जैसे ही 'अ' अक्षर बोलते हैं तो अ अ अ कहते जाएं तो होंठ खुले रह जाते हैं, मुँह खुला रहता है तो मतलब उस शक्ति को याद करने लगे है। जो दुनिया को खोलती है, प्रारम्भ करती है ब्रह्मा को। जैसे ही 'उ' कहा तो 'उकार मतलब विष्णु भगवान जो सारे संसार का पालन पोषण कर रहा है। इसी तरह पोषण कर रहा है जैसे मां अपनी कुक्षी में बच्चे का पोषण करती है, अपने श्वास में श्वास बांटकर अपने बेटे को देती है, जो कोख में बच्चा पलता है, अपने खून का हिस्सा देकर, अपने जिगर का खून देकर अपने बच्चे को पालती है और जो कुछ मां का सुख है वो बच्चे का सुख हो जाता है तो कहते हैं भगवान विष्णु पालन करने वाली महान शक्ति है जो सब मनुष्य मात्र को, प्राणी मात्र को अपने गोद में लेकर पाल रहे हैं। तो 'उ' कहा तो विष्णु महाराज को याद किया और जैसे ही 'म' कहा तो 'म' अक्षर बोलते वही 'ओ३म्' जब बोल रहें हैं न, होंठ बंद हो गये। तो मतलब अब उस शक्ति को याद कर रहे हैं जो सारे संसार को बंद करता है। बंद करने वाली शक्ति महेश्वर–भगवान शंकर जो इस सारी दुनिया को लीन करते हैं। तो जैसे ही आप ओ३म् पर आके टिकते हैं तो ओंठ बंद हो जाते हैं तो मतलब बंद करने वाली शक्ति को याद कर रहे हैं–भगवान शंकर को याद कर रहे हैं। तो ब्रह्मा विष्णु महेश– तीनों को याद करना हो या संसार की सबसे बड़ी शक्ति को याद करना हो तो केवल ओ३म् कह

दीजिये, उसी में सब आ जाता है। तो सबसे पहले आप श्वास

भरकर ओ३म् का उच्चारण प्रारम्भ करेंगे। पहले श्वास फेफड़ों में भरा जाता है फिर ओ३म् का उच्चारण प्रारम्भ करते हैं। पहले मोटी ध्वनि निकालते हैं, धीरे धीरे पतली होती जाती है और बाद में नाक से गूँज पैदा करते हैं जैसे कोई भंवरा गूंज रहा है। जैसे ही उच्चारण समाप्त हो जाये उसके बाद शांत होकर मस्तिष्क के आज्ञा चक्र में, जहाँ पर तिलक लगाया जाता है, इस जगह पर अपना ध्यान टिकाकर शांत बैठते हैं। परमात्मा के साम्राज्य की महान शांति और आनन्द, उससे अपना मौन रूप से सम्बन्ध जोड़ते हैं। आपने शान्त बैठे रहना है, जैसे कोई बादल बरस कर चला गया और आकाश साफ हो गया। ऐसे ही उच्चारण समाप्त करते ही शान्त होकर दो–तीन सैकेंड के लिये ध्यान टिकाना है। इसे आप बढ़ा सकते हैं। दो मिनट तक ले जा सकते हैं, जितनी देर आपका मन टिक जाये। जैसे ही फिर मन हटे फिर श्वास भरेंगे, फेफड़ों में फिर ओ३म् का उच्चारण करेंगे, फिर मन को टिकायेंगे। तो इसी में जाप भी है, इसी में ध्यान भी है। पहले, श्वास भर कर उच्चारण करेंगे ओ३म् ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ म्। श्वास भरकर ओ३म् का उच्चारण कीजिए और बाद में माथे को ढ़ीला छोड़कर शांत और प्रसन्न रहते हुए, ध्यान को टिकायें। अपनी आंखे बंद कर लीजिए।माथे पर कोई दबाव नहीं आने दें, एकदम शान्त हो जायें और अब श्वास भर लीजिये फेफड़ों में और उच्चारण प्रारम्भ करेंगे। ओ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ उ ऽ ऽ ऽ ऽ म———म्। शांत हो जाइये, आंखे बंद रखिये। माथे को ढीला छोड़िये, कोई सलवट, त्योरियां माथे पर न आने दें। आज्ञा चक्र पर, तिलक वाले स्थान पर मन को टिका ले। शांत होते जाएं, कुछ भी नहीं सोचेंगे,

कोई विचार मन में नहीं आने दीजिये, मन को खाली कर लीजिये, दिमाग को खाली कर लीजिये, शान्त होकर बैठे रहें। आंखे खोलिये। निर्विचार होकर बैठे रहें भले ही आंखे खोलकर बैठे रहें। कहीं आप किसी चीज़ पर ध्यान टिका कर साक्षी भाव में बैठे रहें। कुछ भी नहीं सोचना, दिमाग को खाली करके। एक ऐसी स्थिति पैदा करनी है जैसे आप जागे हुए सो रहे हो। जब आप सोते हैं तो होश नहीं होती। तो आप ध्यान में जब बैठते हैं तो ऐसी स्थिति होती है होश रहती है लेकिन जैसे मानो सो गये हैं। जैसे शरीर का ध्यान नहीं होता सोते समय, बस ऐसे ही कुछ देर बैठना चाहिए और आप यह देखिये कि केवल दस मिनट का ध्यान तीन घंटे की नींद के बराबर होता है। इतनी ताज़गी देगा। इसलिये ज़्यादातर **Hospitals** में अब **Meditation** पर ध्यान लोगों का जा रहा है और वहां Centre बन गये हैं, **Meditation Centre** बनाये गये हैं कि ध्यान करना सीखें और प्रक्रिया बस इतनी है। इतना ही याद रखना मन को खाली कर के शांत होकर बैठना है, कुछ नहीं सोचना है। मैं शांत हूँ, मैं शांत हो रहा हूँ, मैं आनन्दित हूँ, मैं प्रसन्न हूँ, ऐसा सोचते हुए, शांत होते जाना। दोबारा से फिर श्वास भरते हुए उच्चारण प्रारम्भ करें। ओ ऽऽऽऽऽ उ ऽऽऽऽ म् ऽऽऽ। आंखों को बंद रखिये, मन को खाली करें विचारों से, ध्यान कहीं नहीं जाने दें, शांत होते जाइये और गहरी शांति में उतरते जायें। र्निविचार मन बनाये, ज़ोर नहीं लगायेंगे ध्यान टिकाने के लिये, सहज भाव से आंखें बंद करके बैठे रहें। पांच मिनट या दस मिनट, धीरे–धीरे आंखें खोलिये। दोनों हाथ आगे लें जायें, हाथ जोड़ें, दोनों हथेलियों को ज़ोर से रगड़े, इनको और जोर से रगड़िये। अब

अपनी आंखों पर पलकें बंद करके, हथेलियों को रखें। माथे पर

लगाइये, चेहरे पर लगाइये, कंधे पर, भुजाओं पर, पूरे शरीर पर, टांगों तक ले जायें। यह एक प्रक्रिया हुई। इसी प्रक्रिया में आपको एक चीज़ और याद करा दें क्योंकि आप जब ध्यान करेंगे तो और शांति लाने के लिये एक उपाय और भी है। अपने बीच वाली ऊंगली कानों में डालकर एक मिनट के लिए बैठ जायें और विचारों से रहित करें मनको, अपने मस्तिष्क को, आंखें बंद कर लें, माथे को ढीला छोड़ दें, धीरे–धीरे अपनी उंगलियां हटाते जायें। आपने देखा होगा कि कितना खालीपन अन्दर अनुभव हुआ है और इसी में विधि यह भी है कि उच्चारण करते हुए उंगलियों को खोलते जायें, बंद करते जायें, एक विधि यह भी है तो इसको भी कर लीजिये साथ में । ओ३म् का उच्चारण करते जायेंगे, खोलते जायेंगे, बंद करते जायेंगे। ओ ऽ ऽ ऽ ३ ऽ ऽ ऽ म्। एकदम ऊंगलियाँ बंद रख लीजिये, शांत होकर बैठ जाइये अब, आंखें भी बन्द रखें। धीरे–धीरे खोल लीजिये। शांत हो जायें अब। इसके बाद जैसी विधि हो जाये तो एक माला अपनी अपने पास रखनी चाहिए। उसका सहयोग लेते हुए गुरूमंत्र जो दिया जायेगा, बाद में, उसका माला से जाप कर लेना चाहिए। एक माला कम से कम जाप करें। पहला काम होगा आसन पर बैठकर फेफड़ों में श्वास भर के ओ३म् का तीन बार उच्चारण करना है, आंखें बंद कर के ध्यान करना है और अगर मन को ज्यादा शांत करना हो तो कानों में उंगली डालकर थोड़ी देर बैठ जाईये और अगर फिर भी मन तरंगित नहीं हो पा रहा हो तो उच्चारण करते हुए उंगली को थोड़ा खोलें और बंद करें और फिर एकदम बंद करके बैठ जायें। तो

यह हुई पहली बात, दूसरी बात है माला लेकर मन्त्र का जाप कर लें। दो बात हो गई। तीसरी बात है भगवान् को नमस्कार करें। हाथ जोड़ लीजिये, अंगूठे अपने फेफड़ों से मिला लीजिये, हाथ जोड़ लीजिये और थोड़ा माथा झुका लीजिये। ऐसे बैठिये जैसे भगवान राम के चरणों में हनुमान जी बैठे हुए हैं। इस तरह से बैठे हुए आपने जो भगवान को कहना है वो मन–मन में ध्यान कर लेना । मैं बोल रहा हूँ और आप केवल मन वहीं टिकाये रखें।

"हे परमपिता परमात्मन्, हे भगवान, मैं आपको प्रणाम करता हूँ, मेरा प्रणाम स्वीकार करो। हे प्रभु, मेरे हृदय मन्दिर में विराजमान होइये। मुझे अपने प्रेम और भक्ति से भरपूर करो। परमात्मा, आपने जो मेरे ऊपर अनन्त कृपा की है, उपकार किये हैं, उसके लिये मैं आपको बार–बार धन्यवाद करता हूँ, मेरा प्रणाम स्वीकार करो।"

ये नमन् की प्रक्रिया है। लेकिन इसको आप याद कैसे करेंगे? तो याद करने के लिये ऐसा भी नहीं की कागज पर नोट करेंगे। तो मोटे ढ़ंग से सुन लें क्या कहा मैंने ? क्योंकि जो सुनाया जाये वह याद न हो तो फिर बताने का फायदा कोई नहीं है। कोई पूज्यनीय व्यक्ति, कोई बड़ा बुजुर्ग मिल जाये आपको रास्ते में, तो आप पहले उसे देखकर हाथ जोड़ते हैं, नमस्कार करते हैं। उसके बाद आप कहते हैं आइये, पधारिये, आपका स्वागत है। घर में आने के लिये निमंत्रण देते हैं न। जैसे ही घर में वह पूज्य आ जाये तो आप कहते हैं बड़ी मेहरबानी आपकी, बड़ी कृपा की आपने। ऐसे ही भगवान को कहना है। तीन ही बातें कहनी है आपने – जैसे भगवान मिल गये आपने कहा, भगवान जी आपको प्रणाम है। फिर आप कहेंगे–भगवान् आपका स्वागत है, मेरे हृदय मन्दिर में विराजमान हो जाओ। तीसरी बात आप कहेंगे आपने जो एहसान किये उसके

लिये बहुत –बहुत धन्यवाद। बस इतना ही कहना है। ये तो आप रोज करते ही हो। कोई भी मिलेगा तो ऐसे ही आप बात करते हैं न। तो जो दुनिया का सबसे बड़ा मालिक है वो मिल गया तो पहले आपने हाथ जोड़ लेने हैं फिर उनका स्वागत करना है Welcome करना है मेरे घर में पधारो, घर कौन सा ? हृदय मन्दिर में विराजमान हो। फिर आपने कहना है, बड़ी मेहरबानी आपकी, बड़ी कृपा, बहुत धन्यवाद और एक बार फिर से आप कहेंगे आपको बहुत–बहुत प्रणाम। तो ये हुआ नमस्कार। ये करने के बाद फिर दोनों हाथ फैलाकर झोली बनायेंगे अर्थात् अन्जलि बनाकर प्रार्थना करो। झोली फैलाकर भगवान से मांगोगे। जो भी आप ने माँगना है अपने बाप से, अपने पिता से , अपने भगवान से जो मांगना है। बेटे को सीखाना नहीं पड़ता कैसे मांगना है। वह ज़िद से भी मांगता है, रूठे पिता को मनाकर के भी मांगेगा, रोकर भी मांगेगा। जैसे भी मांगना है आप मांगिये। हां, कहना किस तरह से है, थोड़ा बता देता हूँ अंजलि बना लीजिये और अपने भगवान का नाम लेते हुए कहें – *"हे प्रभो ! हे दीनानाथ, हे भगवान, मैं आपकी शरण में हूँ। आप मेरे ऊपर अनन्त उपकार करते हैं प्रभु। मैं आपके दर पर आया हूँ, मेरी झोली भरो, सुख शांति दो, घर परिवार में आनन्द की वृद्धि हो। हे प्रभु–हर दिन आपकी तरफ मेरा ध्यान लगा रहे। दुनिया की भीड़ में खो न जाऊं, मेरा सहारा बनिये भगवान्। अपना आशीर्वाद प्रदान कीजिये। हे भगवान, मेरी ये वाणी कभी आपका नाम जपने में आलसी न हो। मेरे हृदय में सदा आपका प्यार बना रहे। मेरी आंखें आपकी महिमा को देखते हुए थके नहीं। प्रभु–शक्ति दो, आपका ध्यान कर सकूं, मेरे घर परिवार में सुख शान्ति दो, समृद्धि प्रदान करो। यही प्रार्थना है। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओ३म्।*

आपने भगवान का नाम लेकर जो मांगना है अंजलि फैलाकर मांगे। तो चार चीज़ें हुई—पहली बात आसन पर बैठकर श्वास भरकर के ओ३म् का उच्चारण तीन बार। उसके बाद माला लेकर गुरूमंत्र का जाप। तीसरा कार्य हाथ जोड़कर भगवान को नमस्कार। चौथा कार्य अंजलि बनाकर भगवान से झोली भरने के लिये प्रार्थना करना। बस इतना ही कार्य आपने रोज़ करना है। तो यह मुश्किल नहीं है और ज्यादा समय भी नहीं लगेगा। लेकिन फिर भी अगर कभी बहुत जल्दी में हैं और नहीं कोई नियम पूरा कर पा रहे हैं तो एक माला जप के उठ जाओ और कभी एकदम आपात स्थिति हो Emergency होती है, नहीं आदमी बैठ पाता माला भी नहीं जप पाता तो मन—मन में जाप करते हुए चले जाओ, पर नियम तोड़ना नहीं। हाँ, ये ध्यान रखना—मीट, मांस, शराब, नशा आदि से आप परहेज करेंगे। महिलाओं के लिये इतनी छूट है कि अगर घर में बना कर देना पड़े तो दे सकते हैं। बना के दे सकते हैं पर खायेंगे नहीं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि आप इसी बात को लेकर घर में विद्रोह पैदा कर दें और घर के लोग कहें कि अच्छा मंत्र लिया इसने कि घर की व्यवस्था ही बिगड़ गई लेकिन स्वयं परहेज करो। इसके साथ में अपनी कमाई का कुछ अंश अपने धार्मिक कार्यों में लगाओ और यह भी याद रखो कि एक वर्ष तक कम से कम एक साल अपने ही सत्संगों को और विचारों को सुनते हुए मन और मस्तिष्क को परिपक्व बनाना, पकाना है क्योंकि कच्चा मस्तिष्क लेकर अगर आप कहीं इधर—उधर चले गये तो मन में संशय आयेंगे और दूसरे लोग श्रद्धा को हिलाने डुलाने में कसर नहीं छोड़ते। मेरे गुरू बड़े महान् हैं बड़े चमत्कार दिखाते हैं तो ऐसा करते —करते लोग दूसरे को हिलाने की कोशिश करते हैं और एक बात ध्यान रखिये। ज्यादा

किसी पत्रे में, तन्त्र–मन्त्र में पड़ने से घर में अशान्ति आती है क्योंकि

भगवान से बढ़कर दुनिया में कोई ऊँचा कार्य नहीं तो भगवान का भजन करो, उसी पर विश्वास करो, देर सवेर वहीं से कृपा होगी। इधर–उधर भागने की ज़रूरत नहीं। कोई भी तांत्रिक, कोई भी मांत्रिक, कोई भी जन्त्र–तन्त्र करने वाला मिले, हाथ जोड़ो क्योंकि अगर इस चक्कर में पड़ गये तो घर में अशान्ति आ जायेगी। ज़्यादातर लोगों के मन में यही होता है कि इधर–उधर भागने लग जाते हैं कि ज़रा देखना क्या होगा ? क्या नहीं होगा ? ये जो हाथ घुमाकर राख निक़ाल कर देते हैं न इन लोगों से बचना। नहीं तो आप अपने आप को अशांत कर लोगे। इसलिये बताना चाह रहा हूँ क्योंकि मैंने ऐसे लोगों के बीच में थोड़ा समय नहीं १०–१२ साल गुज़ारे हैं और आश्रमों में जगह–जगह प्रवचन भी किये हैं और बहुत सारे लोग हमसे सीखने भी आते रहे हैं लेकिन हम लोग ये तन्त्र–मन्त्र को महत्त्व नहीं देते। हाँ, विद्या क्या है, इसको समझने के लिये पढ़ा जरूर है लेकिन इसमें यकीन बिल्कुल नहीं है। आप लोगों से भी यही कहेंगे कि इस पछड़े में न पड़ें। आपने मंत्र ले लिया वो मंत्र ही आपकी बड़ी भारी शक्ति होगी। उसी को आप जपेंगे तो आपके बहुत सारे रोग–शोक, कष्ट–क्लेश कटेंगे। उसके बाद भी अगर कभी कोई समस्या हो, घर का कोई रोग नहीं जाता हो तो पूर्ण इलाज तो करवाइये लेकिन उस रोगी के वज़न के बराबर अनाज तोलकर किसी गरीब को या किसी मन्दिर में दान कर देना चाहिए। दूसरा, पक्षियों को दाना डालना चाहिए। चींटियों को आटा डाल दें। इतना कार्य और कर दें तो इससे लाभ होता है और घर में अगर कभी ऐसा होता है किसी बच्चे को कोई ज्यादा टोक लगती है, ठीक नहीं रहता तो उसके लिये भी आप मोर के पंख घर में

रख सकते हैं और कभी–कभी नीम के पत्ते भी तोड़कर एक तरफ रख लिया करें। इससे लाभ हो जाता है । कभी–कभी ऐसा भी कर सकते हैं गुगल मिल जाती है पंसारी की दुकान पर, वहाँ से लेकर अग्नि जलाकर या कच्चे कोयले सुलगाकर उसके ऊपर आप गुगल और थोड़ा सा घी और शक्कर मिलाकर डाल दें तो घर के बहुत सारे रोग–शोक, कष्ट, क्लेश हट जायेंगे। बस इतना ही आप सीख लीजिए। इसी में सारे जंत्र, मंत्र, तंत्र आ गये। इतने में ही कल्याण हो जायेगा। इतना ही कर दोगे और किसी के घर जाकर कोई समस्या हो तो अग्नि जलाना और थोड़ी सी आहुति जलाकर आ जाना । कह देना भाग गई सब समस्या और सच में ही भाग जायेगी क्योंकि इतने में ही सब आ गया। परमात्मा ने जो कुछ दे रखा है बहुत कुछ है इसमें। अपने गुरूमंत्र का जाप करके और अग्नि में गुगल, शक्कर, थोड़ा घी मिलाकर डाल देना, कल्याण हो जायेगा। तो यह प्रक्रिया आप लोगों को बतायी है और दो–तीन आवश्यक बातें और भी हैं। आप लोगों को चाहिए एक काम सेवा का रोज अपने हाथ में ले लो। एक काम सेवा का जरूर किया करें। दूसरी बात सत्संग में मन अपना जोड़ें। तीसरी बात अच्छी पुस्तक लेकर उसका रोज़ एक पेज पढ़ लिया करें। इसके साथ में सुबह शाम का सिमरन उस पर ध्यान दीजिये। पांचवी चीज़ है सब्र करना सीखिये। भगवान ने जो दिया, कम नहीं है। उसी में खुशी मनाए, सन्तुष्टी पायें। छठी चीज़ है समर्पण करें। परमात्मा को अपनी चिंतायें सौंप दें। कहो भगवान मैंने तो अपनी नैया आपके हवाले कर दी। तो ऐसा समझ लीजिए सेवा, सिमरन, स्वाध्याय, सत्संग, संतोष और समपर्ण। सेवा करने का समय निकाल लीजिये और अपनी कमाई का २ प्रतिशत कम से कम नेक काम में लगाने

के लिये अलग से रख लेना चाहिए। पुराने ग्रंथों में दसवांश को लिये कहा है के दसवां हिस्सा मतलब १०० रूपये कमाते हैं तो १०रूपये दान। लेकिन मैं कहता हूँ दो रूपये ही कर लो पर निकालो जरूर। ऐसा करने से रोग—शोक, कष्ट—क्लेश कटते हैं कमाई पवित्र होती है। तो जो कुछ बताया इसको आप ध्यान देंगे और इसी में आवश्यक बात ये है कि सवेरे जैसे आप उठ कर के जाप करते हैं तो कोशिश करो कि सवेरे के समय ऊँचा नहीं बोलना बल्कि जाप करने तक किसी से बात न करें तो ज्यादा अच्छा है। सवेरे का समय अपना प्रभात का समय बहुत ही शांत बनाना चाहिये। भगवान की आराधना दोनों समय करें तो बहुत अच्छा नहीं तो कम से कम एक समय सुबह जरूर करें जो सुबह नहीं कर सकते वो शाम को करें और रात्रि में सोते समय एक बार भले ही लेटे—लेटे कर लें। पर प्रार्थना कर के सोया करें।

हे प्रभो! आपने जो आज का दिन दिखाया, वो अच्छा बीता, आपकी बड़ी कृपा रही। आने वाला दिन और अच्छा बीत जाये। भगवान अपना आशीर्वाद वाला हाथ मेरे सिर पर सदा बनायें रखना। भगवान प्रणाम करता हूँ। आपके चरणों में नमन करता हूँ, आपके चरणों में नमन करता हूँ, ऐसा करके सो जाये। तो यह रोज का नियम अपना बना लीजिये और भोजन करने बैठो तो आंखे बंद करके भगवान् को धन्यवाद दे दिया करो । तो ये आवश्यक बातें ही आपके लिये और महिलाओं के लिये ४—५ दिन का समय अशुद्ध होता है। जब अशुद्ध होते हैं उस समय अगर बैठकर देवी—देवताओं को प्रणाम नहीं कर सकते तो मन—मन में जाप पूरा कर लिया करें। इसके साथ में यह भी सोचिये जो विधि आपको बतलायी है इस विधि को करने के बाद आपको चाहिये पूरा विधि—विधान सम्पन्न करके

फिर अपने देवी–देवताओं को तिलक लगाकर घर में जो आप अब तक पूजा पाठ करते रहें हैं वो सब करके हाथ जोड़कर फिर उठा करें। ऐसा भी नहीं कि जो आपको दिया जा रहा है उसमें आप इसे पकड़ लें और पहले वाले को छोड़ दें, ऐसा नहीं करना। जो आप करते रहे हैं पूजा–पाठ या देवी देवताओं का पूजन करते रहे हैं, संध्या–वन्दन करते रहे हैं वो भी सब आपने जारी रखना है। जो दिया जा रहा है उसे जोड़ना है इतना ही ध्यान करना है। इस तरह से आपने चलना है और इसमें भी अगर एक विधि और जोड़ना चाहें तो और ज्यादा अच्छा हो सकता है। गुरूदेव का चित्र सामने रखकर इतनी ऊँचाई पर रखो कि आप की आंखें और गुरूदेव के चित्र की आंखें सम्मुख हों। उस अवस्था में बैठे–बैठे आप एकटक देखें और तब तक देखते रहें जब तक आपकी आंखें बंद होने के लिये तत्पर न हो जायें। जैसे ही आंखें पलक झपकने के लगे तो आंखें बंद कर लीजिये और अन्दर–अन्दर चित्र का प्रतिबिम्ब देखें। फिर आंखें खोलना, चित्र देखना और देखते देखते फिर बंद कर लेना। यह विधि है त्राटक की विधि। इसे दो मिनट से लेकर ज्यादा से ज्यादा पाँच मिनट तक कर सकते हैं। पाँच मिनट से ज्यादा बिल्कुल नहीं करना चाहिए। इससे आपके अन्दर सम्मोहिनी शक्ति पैदा होगी। इससे आपके अन्दर एक विशेष ताकत आयेगी। गुरु के सूक्ष्म शरीर से सम्बन्ध जुड़ेगा। तो अब तक जो मैंने बताया यह थी भूमिका। अब मंत्र दीक्षा की तैयारी मानसिक, आत्मिक तौर पर आपने करनी है।

जीवन झांकी की एक झांकी

वर्षों की बूँदो में झरती है शान्ति अमर
सुधाधार गिरती है स्वर की वर्षा बनकर
रिमझिम रिमझिम रिमझिम

यह रिमझिम रिमझिम वर्षा की अमृत बून्दों को बरसाने वाले प्यासे चातकों को सुधाधार से तृप्त कराने वाले चकोर के चन्द्र कोई और नहीं हमारे सद्गुरू आचार्य श्री यशपाल सुधांशुजी महाराज ही तो हैं, जो आज जन जन के सूखे मन के मरूस्थल में हरियाली बरसा रहें हैं।

गौरवशाली उड़ते आनन्द भरे
विश्व नये हीरक कण जैसे ये बून्द झरे
रिमझिम रिमझिम रिमझिम

भारत की धरती का सदा सौभाग्य रहा कि यह धरती ऋषियों, अवतारों, वीर पुरूषों, साधुजनों, सिद्धजनों की क्रीड़ास्थली बनी रही है। हर युग में कोई न कोई सिद्धपुरूष, कोई महामानव, मानवता के भाग्य जगाता है, युग की नयी चेतना देता है। देखने में हर महामानव प्रायः साधारण ही दिखाई देता है किन्तु उसकी देन सदा ही असाधारण रही है।

मेरी इच्छा थी कि मैं पूज्यवर आचार्य श्री गुरू महाराज सुधांशुजी की जीवन यात्रा की जीवन झांकी जान सकूँ । अनेक भक्तों के आग्रह पर पूज्यवर ने अपने जीवन वृतान्त को लिखना प्रारम्भ किया परन्तु उनकी कोशिश है वह उसे अभी प्रकाशित न

करें किन्तु कुछ अंशों को जानने का, देखने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ जो पढ़ा, देखा, उसे प्रस्तुत करना अपना परम कर्त्तव्य समझ रही हूँ।

गुरू के प्रति शिष्य का गहरा लगाव होता है। शिष्य सदैव अपने गुरू को अपने पास अनुभव करता है। हर क्षण और हर पग पग पर। स्वामी रामतीर्थ ने कहा था –

तुम मेरे साथ रहो तब करूंगा मैं प्रार्थना
तुम मेरे ही संग रहो सदा दिन भर, निशिभर
तब तक जब तक कि दिवा निशि हो जाते विलुप्त
तुम चुपके चुपके साथ रहो, अब दूर यहाँ से मत जाओ
मुझको तुम छोड़ न जा सकते
दृढ़ता से मैंने तुम्हें पकड़ रखा है
बालुका तटों पर? नहीं, न सागर लहरों पर
प्रत्युत अपने प्राणों से मैंने बांध रखा है तव प्राणों को।

हर एक हृदय में यह इच्छा होती है कि मानवता के उच्च शिखर पर आरूढ़ होने वाले महापुरूष के जीवन के सम्बन्ध में जाना जाये, अपने सद्गुरू के कृत्यों का योग यात्रा का वर्णन जाना जाये, यद्यपि सब को प्रेरणा देकर कार्य कराने वाले भी तो स्वयं सद्गुरू हैं।

भक्तिरस का मधुर पवित्र रस संचार करने वाले धर्म की, मानवीयता की जागृति पैदा करने वाले, ऋषि मुनियों की महान संस्कृति की पुनस्थापना करने के लिये कृति संकल्प आचार्य सुधांशुजी महाराज का जन्म सहारनपुर उत्तर–प्रदेश में हुआ। आपको धार्मिक संस्कार जन्म से ही माता–पिता के द्वारा मिले। बाल्यकाल में ही साधु सन्त ज्ञानी ध्यानी विद्वानों का संग प्राप्त हुआ। दस वर्ष की अवस्था में, आप स्वामी विजेन्द्र ब्रह्मचारी, जो महान

सिद्ध थे, के सान्निध्य में उनको शिवालिक की उपत्यका में, यमुना नहर के किनारे बन में निर्मित साधना आश्रम में रहे। वहां की कठोर जीवनचर्या में आपने साधना का शुभारम्भ किया। कुछ समय के बाद आप को पारिवारिक जनों की मोह ममता के कारण अपने घर आना पड़ा। घर आने के बाद आपका मन भक्ति की चर्चा करने में ही रत रहने लगा। प्रभात में ही भगवत् भजन, मंत्र जप करने का नियम दृढ़ हो गया। सांध्य काल में बाग में जाकर सन्ध्या वन्दना करना, चांदनी रात भगवान की महिमा का चिंतन करते रहना आपको अच्छा लगता था। रात्रि में सोते समय अपने पूज्य पिता श्री हरिश्चन्द्र जी से धार्मिक कथायें सुनना आपका प्रति रात्रि का नियम बन गया। आपके पिता श्री ने आपको रामायण, महाभारत, इतिहास पुराण धार्मिक ग्रन्थों के सन्दर्भ प्रसंग दिल खोल कर सुनाये और आप भी कभी–कभी आधी रात तक उन्हें और सुनाने के लिये बाध्य करते थे। आपके पिताजी के संस्कार आर्यसमाजी थे किन्तु वे काफी उदारवादी विचार रखते थे। माता जी के संस्कार सम्पूर्ण सनातन धर्मी थे। माताजी के आदेश पर आपको नित्य शिवजी पर जल चढ़ाने का कार्य करना होता था, जिसको पिताजी अच्छा नहीं मानते थे परन्तु माताजी लालच देकर भी आपको जल चढ़ाने के लिये विवश करती थी। माता श्री की श्रद्धा और पिता श्री की ज्ञान धारा से आपका बाल्यकाल विकसित होता रहा। स्कूल जाने के दिनों में ही आप अपने आस–पास के बच्चों को इकट्ठा करके धार्मिक शिक्षाओं और कहानियों को सुनाकर उपदेश करते थे, जिससे कुछ बच्चे आपकी बातों को हैरत से सुनते थे परन्तु बड़ी आयु के बालक मजाक उड़ाते थे। आपका स्वभाव बड़ा शर्मीला था तो आप मजाक उड़ाये जाने के डर से बाग में पेड़ पौधों को भी भजन सुनाते थे और उन्हें अपना प्रवचन देते थे।

बचपन में आपने बच्चों को इकट्ठा करके कई बार नाटक भी किया। एक पीली चादर बायें कन्धे से आधी ओढ़कर आप अपने चचेरे भाई से बोलते थे विदुर जी हम आपका शाक खायेंगे परन्तु दुर्योधन का स्वादिष्ट अन्न नहीं। अब हम हस्तिनापुर के राजदरबार में सन्धि की इच्छा से जाना चाहते हैं। इस नाटक को आप बार बार किया करते थे। एक बार बड़ी आयु के लोगों ने इस नाटक को देखा तो वे सब बहुत हंसे ओर आपको कृष्ण भगवान कहकर आपका खूब मजाक उड़ाया। यदा–कदा मखौल करने में बड़ी आयु के लोगों ने कसर नहीं छोड़ी। यह सब आपको बहुत बुरा लगता था, आपने इसके बाद कभी किसी के सामने कोई प्रवचन या भजन नहीं गाया, न ही कोई नाटक ही किया।

प्राइमरी विद्यालय के हैडमास्टर आपको ऋषि मुनि कह कर बुलाते थे। आपके हैडमास्टर श्री चेतराम आपको गलती करने पर हाथ जोड़कर इतना ही कहते थे कि ऋषि मुनि जी आपसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। यह सुनकर आपको बहुत रोना आता था। कभी–कभी अंताक्षरी में आप धार्मिक गीत के बोल जब गाकर बोलते थे तो आपके अध्यापकगण वाह–वाह कर उठते थे। हायर सैकेण्डरी शिक्षा के बाद आप गुरूकुल ब्रह्म महाविद्यालय में शिक्षा के लिये गये। आपके आचार्य ज्ञानचन्द महाजन ने आपको उपनिषद् पढ़ने के लिये प्रेरित किया। चार वर्षों तक आपने वेद, उपनिषद्, व्याकरण, छन्दशास्त्र, निरूक्त इतिहास, भूगोल, संस्कृत व हिन्दी साहित्य का भरपूर अध्ययन किया। इसी बीच आपने कविता तथा साहित्य लेखन का कार्य प्रारम्भ किया। यहीं पर रहकर अपनी उपदेश करने की शैली को भी निखारा।

आप १७ वर्ष की आयु से ही प्रवचन श्रोताओं को आकृष्ट करने लगे थे। १८ वर्ष की अवस्था में आपने गुरूकुल अध्ययन पूर्ण किया।

फिर आप हरिद्वार आये। यहाँ मोहन आश्रम में आपने प्रवचन किये

जो साधुओं को बहुत पसन्द आये। एक दिग्गज साधु ने आपसे अपना प्रमुख शिष्य बनने का आग्रह किया। आश्रम की बड़ी भरी संपति का लालच भी दिया परन्तु आपने इन सबसे इन्कार कर दिया। इसके बाद ज्वालापुर महाविद्यालय, हरिद्वार में आपने अध्ययन किया। प्रवचन और अध्ययन साथ–साथ चलता रहा।

मेरठ में रहकर आपने मेरठ विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। इसी मध्य भारत भ्रमण भी किया। १९७८ में आपने दिल्ली को अपना कार्यक्षेत्र चुना। यहीं पर धर्माचार्य पद पर रहते हुए आप प्रवचन एवं धार्मिक कर्मकाण्ड का कार्य करते रहे। आपके जीवन की उल्लेखनीय घटना घटी १९८५ को जब आप जून के अन्तिम सप्ताह में उत्तरकाशी गये । विभिन्न स्थानों पर रहकर आपने योग साधना की। गंगातट पर आपको स्वामी दयानन्द का सान्निध्य मिला। आप दोनों का साहचर्य तीन दिन चला, जिसके कारण आपकी सप्त दिव्य ज्योति जागृत हुई। शुक्रवार की दिव्य शाम गंगा तट पर जहाँ आप स्वामी जी की बताई विधि से विशाल शिला खण्ड पर बैठ साधना रत थे आपने अपने अन्दर प्रकाश का घेरा देखा, आंखें खोलीं लगा जैसे प्रकाश पुंज के मध्य आप बैठे हुए हैं। आधी रात तक आप दोनों वहाँ बैठे रहे। धरती आकाश में जैसे ओंकार की ध्वनि गूँज रही थी। उस समय एकाएक आपका ध्यान लगा और आनन्द के सागर में आप डूबते रहे। मध्य रात्रि में जब ध्यान टूटा तब ८० वर्षीय वृद्ध स्वामी जी ने आपको सम्बोधित करते हुए कहा हे दिव्य आत्मन्! स्वयं को पहचानो, तुम इस धरती धाम पर क्यों आये हो ? तुम साधारण जीव नहीं हो जो संसार की मायाजाल में उलझ कर जीवन लीला समाप्त कर लो। देखो इस गंगा को यहाँ कितनी पवित्र है और परन्तु इस संसार

भर में धर्म और भक्ति की गंगा मैली हो गई है इसे पवित्र करने का कार्य तुम्हें करना होगा। मैं तुम्हारे जैसे किसी दिव्य आत्मा की खोज में था और तुम अब आये हो बहुत देर कर दी मेरा शरीर बूढ़ा हो चुका है। अब मैं तुम्हें ज्यादा कुछ नहीं दे सकता। परन्तु तुम्हारे लिए कुछ लिख कर दूगाँ उसे सदा अपने पास रखना। अगले दिन सारा दिन आपका चिन्तन में बीता। सांध्य समय में स्वामी जी आये और आपके भविष्य में किये जाने वाले कार्यो की भविष्य वाणी लिख कर आपको दे कर चले गये। उस कागज पर विशेष सिद्धि और साधनाओं का भी वर्णन था जिस पर उस समय पढ़कर आपको विश्वास नहीं हुआ। आप दिल्ली आ गए। एक दिन दिल्ली में आपकी माता जी मिलने आयीं तो उन्होंने बचपन में किसी ज्योतिषी की भविष्यवाणी सुनायी। देश विदेश में लाखों के बीच तुम्हारी जय जयकार होगी और तुम साधु बनकर दुनिया में चमत्कारी कार्य करोगे। माताजी ने आपसे साधु न बनने का वचन लिया। आपने अपनी माता श्री से कहा मैं कभी गेरूए वस्त्र नहीं पहनूँगा और न कभी दाढ़ी आदि वाला वेश धारण करूँगा। १६८६ में आप थाईलैण्ड गए। बैंकाक से चिनामई जाते हुए एक थाई बालिका जो प्रसिद्ध भविष्यवक्ता थी ने आपके भावी जीवन के बारे में बताया। आपके शरीर से निकलने वाली दिव्य आभा का उस बालिका ने अद्‌भुत वर्णन किया। आपके अतीत के सम्बन्ध में उसको प्रामणिक जानकारी दी। आपके साथ भारतवर्ष के दो प्रसिद्ध साधु महामण्उलेश्वर भी थे जो यह सब देख रहे थे, आश्चर्य चकित हो रहें थे। थाई देश में आप ४० दिन रहे। यहाँ पर आपने गायत्री साधना पूरी की। इसके पश्चात् भारत आ कर आपने अपने हृदय मन्दिर से आती आवाज़ के आधार पर विश्व जागृति मिशन की स्थापना की।

◆◆◆◆◆◆

जीवन यात्रा के कुछ पदचिन्ह

आपने बाल्यकाल से ही धर्म एवम् भक्ति की सरिता में स्नान किया है। ऋषिकेश, शिवालिका की उपत्यका में उत्तरकाशी में आपने साधना करते हुए अपने जीवन को मानवता के उच्च शिखर पर पहुंचाया है। प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा प्राप्त करने के बाद अनेक धार्मिक संस्थाओं के मध्य रहकर १५ वर्षों तक कार्य किया। तत्पश्चात् आपने अपनी कृत्रिमता से क्षुब्ध होकर, अपनी आत्मा की पुकार पर जन जन में जागृति, उत्पन्न करने के लिये निकल पड़े।

आपका जीवन प्राचीन ऋषियों की परम्पराओं में नवीनता का सौन्दर्य लिये हुए है। आपके सेवा, सिमरन, स्वाध्याय, सत्संग, सन्तोष, समर्पण, सद्भाव, सहानुभूति, सहयोग, सदाचार को अपना लक्ष्य बनाकर कार्य प्रारम्भ किया।

आप अध्यात्मिक ज्ञान, धर्म, संस्कृति एवं योग के महान् प्रवक्ता हैं। आपकी वाणी में अनुपम संमोहिनी शक्ति है। आपने वेद, गीता, रामायण, भागवत, स्मृति ग्रन्थ, नीति ग्रन्थ, सूत्र ग्रन्थ, उपनिषद तथा योग दर्शन एवं महान् संतो की तथा अष्टावक्र की पवित्र वाणी पर सैकड़ो प्रवचन दिये। धार्मिक वाङमय में भक्ति ज्ञान की ऐसी उपलब्धि अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं हो पा रही है।

देवमन्दिर, प्रार्थना स्कूल, ध्यान योग मन्दिर, वृद्धाश्रम, चिकित्सालय, गौशाला, विद्यालय, गुरूकुल, अध्यात्मक प्रशिक्षण केन्द्र तथा सत्संग स्थलों के निर्माण एवं संचालक इसी भावना को ध्यान में रखकर प्रारम्भ किया। आप एक महान तीर्थ का रूप धारण कर चुके हैं जिससे अनेकों लोग स्वयं को रूपान्तरित कर आनन्दित हो रहें हैं।

संदेश

"सुधांशु जी अपनी पवित्र वाणी से आज दिल्ली नहीं बल्कि देश और विदेशों के अन्दर भी आप जिस तरह से हिन्दू धर्म का प्रचार प्रसार कर रहे हैं आज आप दिल्ली के गौरव हैं, दिल्ली को आप पर स्वाभिमान है क्योंकि मैं बहुत वर्षों से आपको जानता हूँ और आपने जिस तरह से अध्ययन किया एक छोटी आयु के अन्दर, जिस तरह से तपस्या की, साधना की, अध्ययन किया और सरस्वती ने आपकी वाणी पर बैठ कर जो सिद्धि प्रदान की, ये जो आपकी वाणी में इतना आकर्षण है उस पर प्रत्येक दिल्ली वासी को आप पर स्वाभिमान है, नाज़ है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि भगवान इनकी बड़ी आयु करे, इन्हें शक्ति दे ताकि ये मानव धर्म का प्रचार प्रसार करते रहें।"

मदन लाल खुराना
पूर्व मुख्यमंत्री–दिल्ली
वर्तमान उपाध्यक्ष–भारतीय जनता पार्टी

"मानव उत्थान, जन कल्याण, सद्भाव और परोपकार के कार्यों में जो भी महान पुरूष, सन्त लोग अग्रसर हैं, वे हमारे पूजनीय हैं। आचार्य सुधांशुजी महाराज हजारों लोगों के मध्य यह कार्य बखूबी निभा रहे हैं, मै इनके प्रति आदर सहित आभार व्यक्त करता हूँ। दिल्ली और दिल्ली के बाहर के वैचारिक प्रदूषण को शुद्ध करने का कार्य भी आपके द्वारा सम्पन्न हो रहा है। विश्व जागृति मिशन के कार्यकर्ता भी जन सेवा के कार्यों के लिए बधाई के पात्र हैं।"

साहिब सिंह वर्मा
मुख्यमंत्री–दिल्ली सरकार

संदेश

"सुधांशु जी अपनी पवित्र वाणी से आज दिल्ली नहीं बल्कि देश और विदेशों के अन्दर भी आप जिस तरह से हिन्दू धर्म का प्रचार प्रसार कर रहे हैं आज आप दिल्ली के गौरव हैं, दिल्ली को आप पर स्वाभिमान है क्योंकि मैं बहुत वर्षो से आपको जानता हूँ और आपने जिस तरह से अध्ययन किया एक छोटी आयु के अन्दर, जिस तरह से तपस्या की, साधना की, अध्ययन किया और सरस्वती ने आपकी वाणी पर बैठ कर जो सिद्धि प्रदान की, ये जो आपकी वाणी में इतना आकर्षण है उस पर प्रत्येक दिल्ली वासी को आप पर स्वाभिमान है, नाज़ है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि भगवान इनकी बड़ी आयु करे, इन्हें शक्ति दे ताकि ये मानव धर्म का प्रचार प्रसार करते रहें।"

मदन लाल खुराना
पूर्व मुख्यमंत्री–दिल्ली
वर्तमान उपाध्यक्ष–भारतीय जनता पार्टी

"मानव उत्थान, जन कल्याण, सद्भाव और परोपकार के कार्यों में जो भी महान पुरूष, सन्त लोग अग्रसर हैं, वे हमारे पूजनीय हैं। आचार्य सुधांशुजी महाराज हजारों लोगों के मध्य यह कार्य बखूबी निभा रहे हैं, मै इनके प्रति आदर सहित आभार व्यक्त करता हूँ। दिल्ली और दिल्ली के बाहर के वैचारिक प्रदूषण को शुद्ध करने का कार्य भी आपके द्वारा सम्पन्न हो रहा है। विश्व जागृति मिशन के कार्यकर्ता भी जन सेवा के कार्यों के लिए बधाई के पात्र हैं।"

साहिब सिंह वर्मा

मुख्यमंत्री–दिल्ली सरकार

कितने दिन और

कितने दिन और
भक्ति में प्रवेश पाने में
कितने दिन और
हे सदगुरू ! कितने दिन और शेष हैं
बांधे रहूं सर पर यह जीवन का मौर
बीत गई दुपहरिया, घिर आई सांझ
फुर्र हुई चिडियां सब, बगिया है बांझ
जगह जगह मकडी की सौर
तुम्हारा आशीर्वाद पाने में
कितने दिन और
भक्ति में प्रवेश पाने के
हे सदगुरू ! कितने दिन और शेष हैं ?
चुनने चले मोती पर, चुन लाए शंख
हंसो की प्रकृति मिली, किन्तु नहीं पंख
दुख हो कैसे निर्वोर
तुम्हारी अमृत कृपा पाने में
कितने दिन और
भक्ति में प्रवेश पाने में
हे सदगुरू ! कितने दिन और शेष है ?
अब तो निज पद तल दो और
जिससे धरा सहे मुझे, गगन न करे तंग
अपनी ही उमर न बने, अपने पर व्यंग
हे सदगुरू! यथा शीघ्र भक्ति में प्रवेश पा जाऊँ।

-डा० सरोज अग्रवाल

नवयुग के सर्जक-आचार्य सुधांशु जी महाराज

बहुत आयामी व्यक्तित्व के स्वामी, युग–द्रष्टा, प्रभु–संदेश के योग्य संवाहक, परम–आदरणीय सद्‌गुरू आचार्य श्री यशपाल सुधाँशु जी महाराज के पावन चरणों में शत्–शत् नमन। गुरूवर, न जाने कितने जन्मों से बिछड़े थे, तुम्हें शुभ कर्मों से पाया है, आचार्य सुधाँशु जी आप शान्त, दान्त, तपोनिष्ठ, दयालु और शब्दब्रह्म् में निष्णांत हैं, इसीलिए प्रभुवर ने हमें, आप के चरणों में बिठाया है।

चीटीं के पांव में पड़ी पाज़ेब की,
आवाज़ को भगवान सुना करते हैं।
मेरे गुरूवर उसी आवाज़ की सरगम बना,
भजन बुना करते हैं।।
कुछ ऐसा करम करो मेरे खुदा,
मेरे ईश्वर, मेरे अल्लाह, मेरे प्रभु !
दे दो अपना नूर मेरे गुरूवर को,
हम सब मिलकर यही दुआ करते हैं।

गुरू ईश्वर ही हैं, जो सांसारिक जनों का मार्ग–निर्देशन करने हेतु मानव–रूप में अपने को प्रकट करते हैं। वह व्यक्ति और परम–तत्व के बीच की एक कड़ी है। उसका इस लोक और परलोक अर्थात् दोनों ही लोकों में प्रवेश हो सकता है। दोनों लोकों की दहलीज पर खड़े हुए गुरूदेव झुककर एक हाथ से शिष्यों को ऊपर उठाते हैं और दूसरे हाथ से उन्हें परमानन्द के सर्वोच्च शिखर पर बिठा देते हैं। आचार्य सुधांशु जी जब अपनी

संमोहिनी वाणी में संकीर्तन करवाते हैं, तो संसार की सुधबुद्ध खोकर ऐसा लगता है, जैसे गगन के उस छोर में विराजमान नारायण के साक्षात् दर्शन करवाने हेतु गुरूदेव हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं, ओम् नमः शिवाय की मधुर ध्वनि कभी सागर सी गम्भीर, कभी शीतल–मधुर समीर, कभी पहुँचे कैलाश के चीर, धन्य हैं मेरे गुरूदेव, जो शुद्धा–पुष्टि–भक्ति–मार्गी कीर्तन तथा भगवन्नाम का मनमोहक गायन करते हैं। जिस प्रकार वह ईश्वर का गुणगान करते हैं, उससे एक प्रबल रोमांच का जन्म होता है, एक तीव्र संवेग का विकास होता है, जो सांसारिक माया के पाश तोड़कर ईश्वर के पावन चरणों में पहुँचा देता है। आचार्य जी भजन रूपी कुरेदनी से कानों को कुरेद कर प्रभु नाम का अमृत भर देते हैं। गुरूवर सुधाँशु जी के मधुर भजन सुनने के लिये तो भगवान स्वयं आते हैं–

मन कहता है :–

आप सरल, सरस, सौम्य, सुन्दर शब्दों में
प्रभु-रूप का गुणगान करते हो
मधुर, मन-भावनी, संमोहिनी वाणी में,
नारायण शिव का आह्वान करते हो।
तुम्हें तो ज्ञात होगा, गुरूवर,
तुम्हारे भजन सुनने को स्वयं भगवान आते हैं,
हमारे बीच में बैठे, तुम्हारे भजन को सुनते,
प्रभु स्वयं भी गुनगुनाते हैं।

आचार्य सुधाँशु जी के साथ सब शिष्यों का सम्बन्ध आध्यात्मिक है, वह शिष्य के पूरे अस्तित्व के साथ जुड़े हुए हैं, वह ही शिष्य को आध्यात्मवाद के शिखरों तक पहुँचाते हैं। हम

सब का उनसे सम्बन्ध है, यह सम्बन्ध शिष्य की मुक्ति तक इसी प्रकार रहता है। गुरू केवल इसी जन्म में ही नहीं, अपितु भविष्य के जन्मों में भी सहायता करता है, इसीलिए शिष्यों के गुरू के साथ सम्बन्ध सामाजिक नहीं, केवल मानसिक भी नहीं, अपितु आध्यात्मिक हैं। किसी कारणवश गुरूवर अगर मण्डलीय सत्संग में न पधार पायें, तो बरबस मन ऐसे रो उठता है

गुरूवर तुम नहीं आये,
अचानक नयन भर आये,
अचानक दिल यह क्यों रोया,
जैसे कोई अपना है खोया,
ठगे से रह गये नयना,
भरे से रह गये नयना,
यह नयना तो बहुत तरसे,
जी भर के यह बरसे,
गुरूवर तुम नहीं आये,

आचार्य जी जो कुछ भी कहते हैं, वह सब का सब सरल, सात्विक, ऋजु, स्नेह पूर्ण और निर्मल है। अपनी संमोहिनी वाणी से वह एक ऐसा इन्सान तैयार करते हैं, जो स्वयं–समर्थ बनकर स्वयं ही अपने मन के दर्पण में देखे, स्वयं को और देखे प्रभु के उस सत्य स्वरूप को, जो सारे विश्व के प्राणियों के मनों में प्रतिष्ठित है। आचार्य जी का संदेश अच्छा मानव बनने का संदेश है।

आचार्य सुधाँशु जी बुद्धिबल, ज्ञानबल, भक्तिबल, वाक्‌बल और कीर्तिबल के स्वामी हैं। भारत और भारत के बाहर जो कुछ घट रहा है, उस संदर्भ में श्री गुरूदेव एक बार पुनः भारतीयों को

अपनी संस्कृति के प्रति तीव्र गति से क्षीण होती हुई निष्ठा अथवा भक्ति को पुर्नजीवित करने हेतु संसार में प्रकट हुए हैं। उन्होंने ध -र्म के गौरव का बोध कराया है। आध्यात्मिक आदर्श कभी पुराने नहीं होते, आचार्य जी उन्हें नये परिप्रेक्ष्य में अनुठे रूप में प्रस्तुत करते हैं। भारत देश की उज्जवल सांस्कृतिक विरासत को शब्द–पुण्यों से से सजा संवार सुरभित परिवेश में सुधाँशु जी महाराज जनमानस की मानसिक व शारीरिक पीड़ा को हर लेते हैं।

ऐसे सद्गुरू के चरणों में बार–बार नमस्कार, जो साक्षात् महेश्वर हैं, गुरू तो ब्रह्म हैं, क्योंकि वह शिष्य को बनाता है, उसके जीवन को संवारता है, आचार्य जी ने न जाने कितने उदास परिवारों को संवारा है। गुरूदेव ने मन के अन्धकार को मिटाया है, उन्होंने न जाने कितने मनों के संताप को हटाया है। हम सौभाग्यशाली हैं, हमने एक योग्य गुरू का वरण किया, परमपिता परमात्मा से करबद्ध प्रार्थना है अपने सद्गुरू के चरणों में हमारी श्रद्धा बढ़े, उन का आशीर्वाद मिलता रहे, वह प्रभुदर्शन कराते रहें, और हमारा मनुष्य जन्म धन्य हो।

प्रभु जी के चरणों में एक प्रार्थना और,

मुझे नहीं चाहिए मोक्ष,
न स्वर्ग की कामना करता हूँ।
बार-बार भारत की धरती पर,
मैं जीवन पाना चाहता हूँ।
किन्तु एक प्रार्थना है प्रभुवर,
मेरे पुण्य कर्मो को इतना प्रबल करना,
मैं शिष्य बनुं हर जीवन में,
सुधांशु जी को गुरू बनाना चाहता हूँ

स्वर्णिम श्रृंगार किये उषा जैसे प्रतिदिन,
तिमिर मिटाने आती है।
उसी तरह उलझे मानव को,
गुरूवर तुम सुलझाने आये हो।
सरल हृदय, सात्विक वाणी, मधुर शब्द,
गहन ज्ञान से तुम सज्जित हो,
हे श्रेष्ठ मानव, नर-पावन, प्रभुदूत,
सबका जीवन सुलझाने आये हो

इस गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर ईश्वर से एक प्रार्थना और है :–

सुधांशु जी, अनन्य गुरूवर, आपके लिये,
कितने सुख मांगे हम सभी भगवान से
हमारे गुरू को स्वस्थ, दीर्ध जीवन देना प्रभुवर,
हमारी उभर इन की उभर में
जोड़ देना ऐ भगवन,
इन्होंनें हज़ारों दिलों को जीना सिखाया है
गुरूवर ने कितनों की काया-कल्प कर दी,
उनके काम, क्रोध जैसे दुर्गुणों को ऐसे भागया है
इनके ज्ञान की पवित्र धारा से,
सब धुल गये कल्मष,
हज़ारों लाखों मनों को,
गुरूदेव ने उज्जवल बनाया है।

डा. नरेन्द्र मदान
(रीडर - दयालसिंह कॉलेज)

श्रीमति शकुन्तला अग्रवाल : अशरण की शरण-गुरूजी

श्रीमति शकुन्तला अग्रवाल लगातार चार साल तक अस्पताल में प्रत्येक महीने में एक बार तो आई. सी. यू. में ज़रूर ही रह कर आती थी और इसी दौरान उन्हें दो बार दिल का दौरा भी पड़ां उसके पश्चात् एक मनोवैज्ञानिक ने इन्हें बतलाया कि इनकी जीवन की निराशा गहरी हो गई है, पुरानी पड़ गई है, इसका कोई इलाज नहीं है। इनको इसी प्रकार दवाईयों पर रहकर अथवा अधिक बीमारी बढ़ने पर अस्पताल आते जाते रहना ही होगा। इनका इलाज चलता रहा और कर्मफल भोगते–भोगते जिन्दगी को मोड़ बदला। डॉक्टर ने इन्हें सुबह की सैर के लिए जाना जरूरी बता रखा था। सन् १६६२ जून में इनके जीवन का स्वर्ण अवसर आया जब इन्होंने पहली बार पीतमपुरा डिस्ट्रिक पार्क में आचार्य श्री सुधांशु जी महाराज के प्रवचन सुने। सुनते सुनते इन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो इनकी दिल की बात सुनने वाला और उसका हल बताने वाला भगवान स्वयं इन्सान के रूप में मिल गए हों। और तब से इन्हें ऐसी लगन लगी कि यह आचार्य श्री के प्रवचन सुने बिना नहीं रहती थीं। श्रीमति अग्रवाल के हृदय रोग विशेषज्ञ का कहना है कि आचार्य श्री के ज्ञान के जादू ने इनको ऐसी शक्ति प्रदान की है कि जिसके आगे आजकल की मैडिकल साईन्स फेल है।

आचार्य श्री के प्रवचन व भजन सुनना, उनकी मधुमुस्कान और आध्यात्मिक ज्ञान भरी अमृतवाणी सुनते रहना इनका नियम बन गया। प्रवचनों को सुनते सुनते, प्रवचनों की अमृत वर्षा का आनन्द लेते लेते इनके मन में यह प्रेरणा उदित करती रहती थी

कि क्या कभी वह समय आयेगा जब बहुत से नादान, अनजान,

जीवन के झंझटो में फंसी उलझी आत्माएँ जो संसार के माया जाल से उभर नहीं पा रही हैं, भटकती रही हैं, उन तक भी इस अमृत वर्षा की कुछ बूदें पहुँच सकेंगी क्या ? इसी सोच डूबी यह श्रद्धामयी, भावुक, दानशील एवम् सरल स्वभाव वाली आत्मा, सच्ची भक्ति की लहर में ओत प्रोत, अपना अधिकांश समय आचार्य श्री द्वारा दिए गए प्रवचनों का लिखने में लगाती थी और उसे एक ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित कर इस वर्ष गुरूपर्व के अवसर पर आचार्य श्री को भेंट में देने के लिए देखे गए स्वपनों को साकार किया।

प्रो० गोविन्दराम साहनी :

आध्यात्मिक ज्ञान के प्रेरणा स्रोत

परम पूज्य महाराज श्री सुधांशु जी के प्रथम दर्शन और प्रवचन के श्रवण मात्र से ही मैं इतना प्रभावित हुआ कि मैं अपने बहुमूल्य क्षणों को इस जीवन में सार्थक करने के लिए व्यग्र हो उठा। आपके प्रवचनों को सुनने से मुझे अभूतपूर्व आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव होने लगा। मुझे अन्तरतम में यह अनुभूति होने लगी कि इस युग के अध्यात्म पुरूष, सच्चे ज्ञानी सन्त, यही दिव्य विभूति महामाहिमावान महाराज श्री सुधांशु जी ही हैं। आप ही मही के शान्ति के दूत हैं। आपके चरणों की सेवा से ही जीवन के चरम लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकूँगा। मेरी आत्मा पुकार उठी और मेरे अन्तस बाह्य परिवेश में सुधांशु जी महाराज छा गए। मेरी अन्तरआत्मा में आपकी सेवा का संकल्प गहरा होने लगा, श्रद्धा आगध हो गई।

धर्मप्राण ! आत्मजयी सद्गुरु महाराज सुधांशु जी के सामीप्य ने जैसे मेरी काया पलट कर दी। इससे पूर्व मैं खान पान में लोक चाल को अपना कर चलता था किन्तु मुझ पर कुछ ऐसा जादू हुआ कि मैंने भोजन और लोकचाल के दुर्व्यसनों को निरर्थक जानकर सहज ही त्याग दिया। परिणाम स्वरूप एक अद्भूत सात्विक आत्मिक आनन्द का अनुभव हुआ। इष्ट मित्रों ने मेरी आलोचना की, किसी ने विरोध भी किया किन्तु फिर भी मैं पूज्य महाराज श्री सुधांशु जी की अपार कृपा से शुद्ध सात्विक भोजन और रहन–सहन करते रहने के दृढ संकल्प में सफल हो गया। इससे मैंने स्वास्थ्य लाभ किया, अधिक से अधिक कार्य संलग्न रह कर भी व्यथित न होने की, प्रसन्न रहने की अद्भुत शक्ति प्राप्त की। पूज्य महाराज जी के आध्यात्मिक प्रेरक शक्ति से परम सता पर विश्वास आने से साधना अन्तर की प्रारम्भ कर सका और लौकिक रूप से भी सम्पन्न होता गया। पूज्य महाराज जी ने दिव्य ज्ञान के प्रेरक प्रवचनों से मुझे मानवता के चरम लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर अग्रसर कर दिया।

(हंसराज कॉलेज–दिल्ली विश्वविद्यालय)

श्री जी. आर. कत्याल :

गुरू की शक्ति का तत्काल प्रभाव

मैं मिशन से जुड़ा, यह एक चमत्कारी घटना है। टी.वी. में प्रवचन सुनते हुए प्रभु गुरू महाराज सुधांशु जी की अमृत वाणी का अनोखा आनन्द अनुभव हुआ। मैंने परम पूज्य महाराज सुधांशुजी को खोजना प्रारम्भ किया। पता लगाकर मैं नियमपूर्वक आपके सत्संगों में जाने लगा।

कुछ दिनों बाद मंत्र दीक्षा का प्रसंग आया। मेरी पत्नी ने कहा

कि मुझे पूज्य महाराज श्री सुधांशुजी से दीक्षा लेनी है। मैंने पत्नी को वहां पहुंचकर पूज्य महाराज श्री सुधांशुजी के दर्शन कर चरण वन्दना की और कार्यालय जाने को मुड़ कर चलने लगा। उस समय पूज्य महाराज श्री सुधांशुजी ने मुझसे पूछ लिया कि आप भी मंत्र दीक्षा लेंगे, मैंने संकोच के साथ उत्तर दिया कि अभी तो मेरी पत्नी ही लेगी क्योंकि मैं शराब और मीट, मांस का प्रयोग करता हूँ किन्त जैसे ही पूज्य महाराज जी के पास से दूसरे कमरे में आया, मैं रूक गया, नहीं जा सका। जाने मेरे मन में, मेरे पैरों में किस शक्ति की कैसे प्रेरणा जगी, मैं यथाशीघ्र पूज्य महाराज श्री सुधांशुजी के निकट सबसे आगे जा बैठा और बोला कि मंत्र दीक्षा मुझे दीजिये। यह अद्‌भुत, आलौकिक प्रेरणा धन्य है मेरे गुरूदेव।

इस दीक्षा दिवस के दो दिन बाद ही मेरे सम्बन्धी के घर जो बड़े धनी मानी प्रतिष्ठित हैं के घर में एक कॉकटेल पार्टी थी जिसमें हम सपरिवार आमंत्रित थे। मैं इस पार्टी का बहिष्कार कर सका। इसको मैं गुरू महाराज की चमत्कारी शक्ति का अनोखा प्रभाव ही मानता हूँ कि मैं कॉकटेल पार्टी का बहिष्कार करने का साहस कर सका। मुझे मीट, मांस शराब के लिये मजबूर किया गया, कस्में दी गयी परन्तु मैं गुरू महाराज जी की कृपा से अपने निश्चय पर अडिग रहा, अडिग रहूँगा।इसके साथ मेरे जीवन में और घर में जो शान्ति और आनन्द का वातावरण उत्पन्न हुआ मैं इसके लिये गुरू महाराज जी का आभारी हूँ। भगवान करे इसी प्रकार परम पूज्य महाराज जी की कृपा सदा सदा मुझ पर, मेरे परिवार पर बनी रहे, उनका आशीर्वाद हमारे साथ रहे।

बैंक मैनेजर, जनकपुरी

श्री कत्याल (सितम्बर १९९६ जीवन संचेतना)

श्रीमती नैय्यर :

हर पल मेरे साथ रहने वाले

पूज्य महाराज श्री सुधांशुजी आलौकिक दिव्य विभूति ज्ञानी संत हैं। दीक्षा ग्रहण करने के एक सप्ताह पश्चात् ही मुझे पूज्य महाराज जी का आशीर्वाद लेकर अपने बेटे के पास विदेश जाना पड़ा। किन्तु मैं वहां भी सदा यही अनुभव करती कि मैं किसी खुले प्रांगण में महाराज जी के प्रवचन आत्मसात कर रही हूँ। जब कभी कोई समस्या आती तब मेरे चिंतित एवं व्यथित मन को आश्वासन भरा हाथ सिर पर स्पर्श करता प्रतीत होता और समस्या का समाधान मुझे मिल जाता। कई बार तो मैं पूज्य महाराज जी के साक्षात् दर्शन व आशीर्वाद प्राप्त करती और मुझे अनुभव होता कि पूज्य महाराज जी की आलौकिक शक्ति कैसी आश्चर्यजनक है कि आत्मा और आत्मा के मेल में देश काल व परिस्थिति का कोई व्यवधान नहीं आता और देवता की भांति हमें हर स्थान हर समय प्रत्यक्ष सम्बल आध्यात्मिक, लौकिक मिलता है। गुरूवर की महिमा क्या कहूँ उनके आशीर्वाद के पुष्प भी रोग नाशक शक्ति रखते हैं जिसका मैं नित्य प्रयोग कर रही हूँ। जीवन में मुझे प्रत्यक्ष मानसिक, शारीरिक हर रोग का उपचार का अनुभव हो रहा है! धन्य हैं सरल सहज अनोखे गुरूवर महान।

(अप्रैल १९९५ जीवन संचेतना)
प्रीत विहार, दिल्ली।

श्री विजय कुमार अरोड़ा :

मेरे प्रेरणा स्त्रोत

परम पूज्य आचार्य श्री सुधांशुजी महाराज अन्तर्यामी ज्ञानी संत हैं। आप शब्द विवेकी पारखी विरले संत है। मैं अपनी दादी के साथ ही

श्री महाराज सुधांशुजी के प्रवचन सुना करता बड़ी श्रद्धा से परन्तु जीवन क्रम सामान्य था। एक बार मित्र के यहां समीप से दर्शन हुए। मैंने चरण स्पर्श किया तब आशीर्वाद देते हुए बोले–"किस दुनिया में खोये रहते हो धर्म के मार्ग पर दृढ़ता से चलो। आपके यह शब्द मेरे लिये संजीवनी शक्ति बन गये। प्रातः स्मरणीय संत महाराज सुधांशुजी ने मुझे मंच संचालन का आदेश दिया यह आदेश मेरे लिये ज्योति–पुंज बनकर आया। मेरे जीवन की परम ज्ञानी संत सुधांशु जी ने काया पलट ही कर दी, महान हैं मेरे सत्गुरू महाराज सुधांशु जी दिव्य अलौकिक शक्ति पुंज हैं। सामान्य सांसारिक को कुन्दन बना देते हैं। मुझे आचार्य श्री ने 'मिशन की सशक्त वाणी' कहा। इस आभास तक पहुंचाने वाले भी तो वहीं हैं। मैं हृदय रोग से ग्रसित हूँ परन्तु मेरे अन्दर कार्य करने का साहस व शक्ति वे ही भरते हैं

(जनवरी १६६६ जीवन संचेतना)

श्री सीताराम कपूर

यात्रा मे कष्ट हरण

मेरे वन्दनीय, मेरे अलौकिक सद्गुरू के प्रवचन ने पहली ही बार मुझ पर जादू सा असर किया। मैं कई अनेक धार्मिक संस्थाओं में जा चुका था कि ऐसा आलौकि आनन्द मुझे कभी नहीं मिला था। हम आनन्दित होकर सपरिवार सत्संग करने लगे और आलौकिक संत का आशीर्वाद पाने लगे। एक दिन की बात है मैं अपने ससुराल यमुना नगर हरियाणा सपरिवार जा रहा था। मेरी पत्नी के पेट में इतनी तीव्र वेदना होने लगी कि डाक्टर को रास्ते में ही दिखाना पड़ा। डाक्टर की चिकित्सा से कोई लाभ न मिलने

पर हारे निर्बल दुखी विवश ही हमने अपने परम हितैषी अन्तर्यामी सतगुरू को ही श्रद्धा से पुकारा और गुरूवर ने चमत्कारिक रूप से असहनीय वेदना हर ली, कष्ट दूर कर दिया। हमने निर्विघ्न यात्रा पूरी की। अन्तर्यामी गुरूवर की इस अभूतपूर्व कृपा से, चमत्कार से अभिभूत जब हम गुरूवर का धन्यवाद देने पहुँचे, हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब पूज्य महाराज ने हमसे ऐसे बात की जैसे उन्हें हमारे कष्ट का पता है। दयालु कृपालु अनन्त शक्ति पुंज ज्ञानी सद्गुरू भगवान हैं जो जन–जन का दुखी श्रद्धालु का वह जहां भी हो पुकार सुनकर अज्ञात रूप से दुख दूर कर उसे सम्पन्न सफल बना देते हैं। हम साधारण मानव कैसे धन्यवाद करें। उनके ऋण से हम उत्रऋण नहीं हो सकते। हम सत्संग, भज़न उनका करके ही, हम सेवा भाव से अपने को धन्य मानते हैं कि हमें ऐसे महान गुरू मिले हुए हैं।

प्रीत विहार, दिल्ली।

श्रीमती चन्द्रप्रभा गोयल :

भंवर से निकालने वाले

परम पूज्य महाराज श्री सुधांशुजी मेरे हृदय मन्दिर में भगवान की साक्षात् दिव्यमूर्ति से प्रतिष्ठित हैं। उनके ध्यान में मन प्रसन्न रहता है। हर्षित मन संसार की लोक चाल निभाने में समर्थ हो गयी। पूज्य महाराज श्री सुधांशुजी की विशेष कृपा से मैं असाध्य बीमारी से चमत्कारी रूप से उभर रही हूँ। मुझे गुरूवर की दिव्य शक्ति से घर संसार में हंसने बोलने और सत्संग करने योग्य बना दिया। गुरूदेव के दिव्य चमत्कारों का वर्णन कहां तक किन शब्दों में करूं महान हैं मेरे गुरूदेव महाराज।

मुझे कैंसर जैसा रोग था। रात दिन डिप्रेशन रहता था। मेरे दुखी

घर परिवार को जैसे भंवर से आपने बचाया मैं जितना धन्यवाद करूं, कम है।

(मार्च १९९५ जीवन संचेतना)

मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली

श्रीमती स्वर्ण शर्मा :

मेरी श्रद्धा के आयाम पूज्य महाराज जी के प्रति

अगाध श्रद्धा विश्वास से मैं उनका स्मरण कर आत्म विभोर हो जाती हूँ मैंने गुरूवर की असीम कृपा का चमत्कार देखा जो बहुत ही रोमांचकारी है। एक रात जब घना अन्धकार छाया था मैं अकेली एक ऐसे स्थान पर फंस गई जहां से घर आने का कोई साधन न था। मैं घबरा रही थी कि क्या करूं? अन्त में मैंने घबराकर गुरू महाराज का सहारा लेकर उनके शब्दों में भगवान से प्रार्थना की – अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना। मेरी इतनी प्रार्थना करते ही गुरूवर महाराज की असीम कृपा से –जिसका कोई रूट, कोई रास्ता नहीं था, टाइम नहीं था–तीन चार अधिकारियों को लेकर वहां आ खड़ी हुई। मुझे आदर के साथ बस में बैठाकर मेरे अपने घर के आगे तक छोड़ दिया। मेरे विस्मय का ठिकाना न रहा। मेरे मन में पूज्य महाराज जी के चरणों मे और उनके आदेशों में मेरी अपार श्रद्धा हो गई। मुझे अपने अन्दर एक अद्भुत शक्ति का अनुभव होने लगा।

राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

श्री ब्रजेश कुमार :

अज्ञात हाथों की शक्ति

विश्व जागृति मिशन का बिजली का कर्मचारी ब्रजेश कुमार सत्संग स्थल पर शीघ्रता से समय से पहुंचने के हेतु टू–व्हीलर स्कूटर पर जा रहा था किन्तु दुर्भाग्य वश स्कूटर उलटने से ऐसा गिरा कि कपड़े

फट गये, सारा घिसट गया, घाव हो गये और चिल्लाकर बचाओ, महाराज जी बचाओ कहता हुआ बेहोश हो गया। उसे उठाकर उसकी चिकित्सा करायी गयी और वह यथाशीघ्र तीन दिन में स्वस्थ होकर पूज्य महाराज जी के आशीर्वाद स्वरूव सत्संग के कार्य पर उपस्थित हो गया। ब्रजेश का कहना है कि जैसे मुझे अज्ञात हाथों ने शक्ति देकर बचाया है।

(नवम्बर १९९५) इटावा (उ० प्र०)

श्री विनोद कुमार : आशीर्वाद मिला

श्री विनोद कुमार परम पूज्य महाराज श्री सुधांशु जी का गाड़ी का ड्राइवर है। एक दिन उसकी पत्नी बच्चों को लेकर बाजार जा रही थी। उसका बड़ा लड़का स्कूटर की चपेट में आकर चोट खा गया। चेहरे पर खून ही खून हो गया और बालक बेहोश हो गया। लोग उसे हस्ताल ले गये। पता लगने पर विनोद हस्पताल पहुंचा, बेटे की चिकित्सा कराई। आंख के ठीक समीप फटे मांस पर और सिर के पीछे के हिस्से में लगी चोट पर कुल सत्रह टांके लगे। पूज्य महाराज जी के मंगल आशीर्वाद से चोट लगने के चौथे दिन बालक को हस्पताल से छुट्टी मिल गयी। हंसता खेलत बालक सुरक्षित घर आ गया।

(जनवरी १९९६)

श्री विनोद कुमार , इटावा उ० प्र०

श्री धर्ममित्र गुप्ता :

चिन्ता निवारण

श्री धर्म गुप्ता परम पूज्य महाराज श्री सुधांशु जी के श्रद्धालु भक्त हैं। एक बार मैं उदयपुर के लिये प्रस्थान कर रहा था। जब मैं जयपुर

पहुंचने को था, उससे कुछ देर पूर्व मेरी पत्नी ने चाभी के लिये पूछा। मुझे अचानक याद आया कि मैं अपने घर के मुख्य द्वार का ताला लगाना भूल गया हूँ। तब हमने चिन्ता न करके पूज्य महाराज जी के वचन के अनुसार हमने गुरू महाराज के मंत्र की एक माला जपी तभी हमें केबिन के बाहर जाते हुए दिल्ली के, हमारे घर के पास के ही यात्री मिल गये और उन्होंने मेरे पुत्र को समय पर सूचना दे दी जिससे गुरूजी महाराज की असीम कृपा के अद्भुत चमत्कार से मेरा घर सुरक्षित हो गया । उसका ताला बंद होने से और हम निर्विघ्न यात्रा सुखद रूप से करके आ गये।

(मई १६६६ जीवन संचेतना)
श्री धर्म मित्र गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली

श्री जोगिन्द्र धूपड़ :

गाढ़ी कमाई वापिस आयी

श्रीमती धूपड़ कालका जी दिल्ली से अपने पुत्र और पुत्री के साथ थ्री–व्हीलर में अपने घर पीतमपुरा आ गई। घर पहुंचने पर गलती से एक बैग जिसमें लगभग छः हजार रूपये नगद, कुछ जेवर और कपड़े थे, थ्री–व्हीलर में ही रह गये और स्कूटर वाला किराया के पैसे लेकर चला गया। उसके जाने के बाद याद आया। उसी दिन पुलिस चौकी, पीतमपुरा में रिपोर्ट लिखवा दी और १०० नम्बर पर फोन करके सब थानों में पुलिस को सूचना दे दी गयी। स्कूटर नम्बर बता दिया गया। डेढ़ महीने बाद परम पूज्य महाराज जी की कृपा से व आशीर्वाद से उस स्कूटर वाले का पता चल गया और सारा सामान धूपड़ दम्पति को प्राप्त हो गया।

जोगिन्द्र धूपड़, पीतमपुरा,दिल्ली

श्री एन. डी. कपूर :

अभूतपूर्व शान्ति मिली

परम पूज्य आचार्य श्री सुधांशु जी महाराज को पहली बार प्रवचन सुनते ही एक जादू का सा आलम छा गया, सरल भाषा, मन–मुग्ध करने वाली शैली, सहज रूप से बात को कहना। महाराज जी की सौम्यता और विचार सुनकर भटके हुए मन को एक शान्ति सी महसूस हुई। मन में संस्कार तो थे ही, उनकी अभिव्यक्ति के लिए मौका चाहिए था।

इसके बाद मैंने स्वामीजी के प्रीत–विहार के एक क्रमबद्ध प्रवचनों का अन्तिम प्रवचन सुना। यह अष्टावक्र–गीता का सार था। उस दिन मेरी पत्नी भी मेरे साथ थी। लगभग दस–बारह हजार लोग थे। एक घण्टे के प्रवचन में ऐसा लगा जैसे सारा वातावरण एकदम शान्त और स्थिर हो गया है। प्रकृति जैसे गहरी नींद सो गई हो। आगे–पीछे, दायें–बायें बैठे लोग जैसे पत्थर हो गये हों। मैंने अपने स्थान से हथेलियों के भार जरा ऊँचा उठकर चारों तरफ़ नजर घुमा कर देखा, कहीं कोई हरकत नहीं थी। महाराज जी की वाणी और विचार इस तरह लग रहे थे जैसे गर्मियों की किसी शाम में ऋषिकेष के आस–पास कहीं कोई व्यक्ति आँखे मूंदे गंगा में पाँव लटकाये शीतल जल का आनन्द ले रहा हो।

ईश्वर भक्ति में शुरू से ही मेरी रूचि रही है। घर में छोटे से मन्दिर में सुबह–शाम प्रार्थना करना, धार्मिक पुस्तकें पढ़ना और अंग्रेजी में बोलने वाले वक्ताओं को जैसे रामकृष्ण मिशन के

रंगनाथ नन्दा और स्वामी चिन्मयानन्द को सुनना। उनके प्रवचनों में बहुत कुछ होते हुए भी ऐसे लगता था जैसे दादी माँ की प्यार से बनायी हुई खीर कोई छुरी काँटे से खा रहा हो जैसे कोई माँ बच्चे को 'दूरवृत्ति–नियन्त्रण' से प्यार कर रही हो। बात अंग्रजी में अच्छी लगती थी, समझ भी आती थी पर दिल की गहराइयों में नहीं उतरती थी, मन को झंझोड़ती नहीं थी।

स्वामी जी को सुनने के बाद ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई माँ बच्चे के बाल सहलाते हुए लोरी देकर उसे सुला रही हो। उनकी बात मन में सीधी उतरती है और असर करती है।

मेरे मन में एक होड़ थी, पैसा कमाने की। इस होड़ में ऐसा लगा कि रास्ते में खुद को ही खो बैठा और ऐसा लगने लगा जैसे जीवन में सुख–सुविधा के सब साधन होते हुए भी कहीं कुछ कमी है। गुलाम अली की गायी हुई एक गज़ल का एक खूबसूरत शेर याद आ रहा है–

"भरी दुनिया में जी नहीं लगता
जाने किसी चीज़ की कमी है अभी"

यह बात अपने जीवन में बिल्कुल सार्थक थी। वह जिस चीज़ की कमी थीं और वह जिसे जीवन की सरपट दौड़ में खो दिया था उसे पाने के लिए मन बड़ा व्याकुल था। वही खोया हुआ कुछ स्वामी जी के प्रीत विहार वाले प्रवचन में अनायास मिल गया। प्रवचन सुनते ही ऐसा लगा जैसे कारूं का खज़ाना मिल गया हो। मन को एक अभूतपूर्व शान्ति का अहसास हुआ।

(दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

विश्व जागृति मिशन
के सदस्यों के परम कर्तव्य

1. प्रतिदिन सत्संग स्वाध्याय सेवा सिमरण, सन्तोष और समर्पण को जीवन का अंग बनाने का प्रयत्न करें ।

2. दया, दान, दमन ये परलौकिक उन्नति के तीन सूत्र हैं। सब पर दया करें, हिंसक वृति का परित्याग करें। यथा शक्ति परोपकारी कार्यों में तथा सतपान को दान करें। अपनी वृतियों का, अनावश्यक इच्छाओं का दमन करें।

3. अपनी दिनचर्या को अनुशासन, सुव्यवस्था में चलायें, दूरदृष्टि रखकर सुविचारित योजना से समय का सदुपयोग ही मनुष्य को महान् बनाता है। आवश्यक कार्य अपना नैतिक कर्त्तव्य समझ कर करें।

4. ज्ञानी, विद्वान, धर्मात्मा, सत्त्पुरूषों एवं माता, पिता, वृद्धजनों का उचित सम्मान व सेवा सश्रुषा करें। सत्गुरू के प्रति सच्ची श्रद्धा, समर्पण भावना को अपनाएं।

5. भगवान की अराधना, आत्मचिन्तन, तपश्चर्या, प्रार्थना, ध्यान साधना के द्वारा स्वयं को प्रभु का कृपा पात्र बनायें।

6. चोरी, निन्दा, छलकपट आदि अधार्मिक कार्य, अभक्ष्य पदार्थो का ग्रहण कदापि न करें।

7. अपने व्यवहार में मृदुता, स्नेह, सत्य, सद्भावना और सहानुभूति को स्थान दें। दुष्टों, धूर्तो के प्रति उपेक्षा का बर्ताव करें। अपनी आत्मा जैसा व्यवहार दूसरों से करें।

The Mission is immensely thankful to Shri Surendra Kumar and Shrimati Shakuntla Aggarwal for sponsoring this book
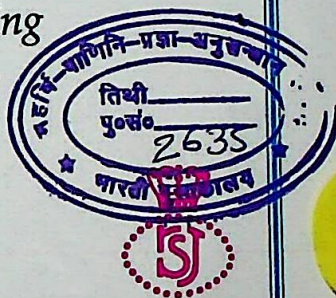
विश्व जागृति प्रकाशन

- **जीवन संचेतना** — मूल्य: [illegible]/- रूपये
  आध्यात्मिक जागृति की सन्देश वाहिका मासिक पत्रिका जिस[illegible] आचार्य सुधांशुजी महाराज के प्रवचनों को भी प्रकाशित किया जाता है।
  सदस्यता: वार्षिक—100 रूपये, आजीवन—600 रूपये।
- **जीवन सौरभ** — मूल्य: [illegible]/- रूपये
  विश्व के महापुरूषों के प्रेरक प्रसंग। सैकड़ों पुस्तकों की [illegible]न्धि इस पुस्तक में निहित है।
- **जीवन धर्म** — मूल्य: 15/- रूपये
  जीवन में धर्म का क्या महत्व है? धर्म किसे कहते हैं? सम्पूर्ण समाधान इस पुस्तक में है।
- **गायत्री महामन्त्र** — मूल्य: 10/- रूपये
  आचार्य श्री सुधाशुजी महाराज के गायत्री प्रवचनों पर आधारित एक लोकप्रिय पुस्तक।
- **सत्संग प्रसाद** — मूल्य: 20/- रूपये
  पूज्यवर आचार्य श्री सुधांशुजी महाराज के प्रवचनों का सार उनके लोकप्रिय उदाहरणों सहित।
- **संचेतना** — मूल्य: 20/- रूपये
  विश्व जागृति मिशन की मासिक पत्रिका "जीवन संचेतना" के चुने हुए लेखों का संग्रह।
- **गीतान्जलि** — मूल्य: 25/- रूपये
  आचार्य सुधांशु जी महाराज द्वारा संकलित लोकप्रिय भजनों की पुस्तक।
- **आत्म जागरण की बेला (भाग 1)** — मूल्य: 50/- रूपये
  आचार्य श्री द्वारा सुखी गृहस्थ के लिए चाणक्य की महान शिक्षाओं एवम् अष्टावक्र महागीता के ब्रह्मज्ञान पर दिए गए प्रवचनों की प्रकाशित श्रृंखला।
- **धर्म ज्ञान गंगा** — मूल्य: 30/- रूपये
  आचार्य श्री द्वारा महात्मा विदुर के धर्म एवम् नीति सूत्रों पर मार्मिक व्याख्या। ज्ञान और आध्यात्मक का अनोखा संगम।
- **FRAGRANCE OF LIFE** — Price: Rs. 25.00
  Contains anecdotes from the lives of great men,. English translation of the popular book Jeevan Saurabh.
- **MESSAGE OF DIVINE BLISS** — Price: Rs. 15:00
  The official bi-annual magazine of Vishwa Jagriti Mission for those who wish to learn the Art of Living. Mag. Membership: Two Years: Rs. 50, Life: Rs. 250

प्रकाशन प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें :

विश्व जागृति प्रकाशन

कार्यालय : ओंकारेश्वर महादेव मन्दिर, जी ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली—110015, फोन : 5467496, 5464402
मुख्य कार्यालय : BP-77, मौर्या एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली—110034
फोन : 7211395